भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 12 | मार्च-अप्रैल (संयुक्तांक) 2011 | अंक 3-4

पुस्तकें : हमारी अंतरंग सखियाँ

—डॉ० जाकिर हुसैन

'आज का असली विश्वविद्यालय है—पुस्तकें।'.. यह बात बिलकुल ठीक कही गयी है। पुस्तकें हमें जीवन के नये रूप दर्शाती हैं, जीने का सही ढंग सिखाती हैं। दुखियों को वे ढाँढ़स बँधाती हैं, जिद्दियों को दण्ड देकर राह पर लाती हैं। मूर्खों की वे लानत-मलामत करती हैं, बुद्धिमानों को बल देती हैं। 'एकान्त में वे हमें सहारा देती हैं; संसार और मनुष्य-जीवन की क्षणभंगुरता को भुला पाने में हमारी मदद करती हैं, हमारी निराशाओं को थपकियाँ देकर सुलाती हैं।'

पुस्तकें आत्मा को विचारों का खाना खिलाती हैं, चिन्तन के चश्मों का पानी पिलाकर उनकी प्यास बुझाती हैं। जैसा कि महान यहूदी विद्वान **जुडा इलेन तिब्बन** ने कहा है—''पुस्तकों से भरी अलमारियाँ तुम्हारे बगीचे हैं, सैरगाहें हैं। वहाँ लगे फल तोड़ो, वहाँ खिले गुलाब चुनो, वहाँ से पराग और लोबान बटोरो।''

सभी जमानों में सभी पीढ़ियों के बड़े आदमियों ने यही पाया है कि पुस्तकें 'विवेक, सदाचार, आनन्द और लाभ देती हैं।' लेकिन आधुनिक समाज में तो वे एकदम अनिवार्य हो चली हैं। यह कैसा व्यंग्य है कि उद्योग-धन्धों के साथ ज्यों-ज्यों लोग बड़ी तादाद में बड़े शहरों में जमा होते जाते हैं, अपने को ज्यादा-ही-ज्यादा अकेला महसूस करते जा रहे हैं। समाज उनके लिए जाने-पहचाने लोगों का समुदाय न रहकर, अपनत्वहीन भीड़ बन जाता है। ऐसे में पुस्तक लगभग दोस्त का स्थान ले लेती है।

पुस्तक तो मानो आज मनुष्य की जीवन-सहचरी है। और बड़ी गजब की सहचरी है यह—बड़ी ही शिष्ट। हम जब और जिस 'मूड' में भी पास बुलायें, यह आ जाती है; सब कुछ साफ-साफ कह देती है, लेकिन बड़ी ही शिष्टता के साथ। हम बातचीत छेड़ें, तभी यह बोलती है; अनंत काल तक हमारे बुलावे का इन्तजार कर सकती है; हमेशा मदद करने को, अपना सर्वस्व देने को तैयार रहती है।

पुस्तक सीख देती है, सलाह देती है, बढ़ावा देती है, झिड़कती है, लेकिन उतना ही जितना कि हमारे लिए आवश्यक है, उससे एक अक्षर भी ज्यादा नहीं। कभी-कभी हम जो अटपटे और मूर्खता भरे सवाल पूछ बैठते हैं, उनसे यह खफा नहीं होती, बल्कि मुस्करा-भर देती

शेष पृष्ठ 14 पर

हिरोशिमा से फुकुशिमा

अभी कुछ क्षण पहले ही तो झूम रहा था वन-प्रान्तर, महमह करते फूलों में उमग रहा था वासंती-उन्माद, अमराईयों में मँडरा रहे थे गुनगुनाते भौंरे, सोलहों-सिंगार सजी चिर-यौवना प्रकृति मदनोत्सव की अल्पना रच रही थी कि अचानक वज्रपात हुआ। 11 मार्च की सुबह सूरज निकलने से पहले, अन्दर-ही-अन्दर मरोड़ खाती धरती का दर्द फूटा जापान के समुद्री-तट पर। 9.4 की तीव्रता के भूकम्प से थर्रा उठा जापान, प्रचण्ड गर्जना करते हुए समुद्र ने भी मर्यादा तोड़ दी और 4/5 मीटर ऊँची लहरों का ज्वार लिये आसपास के गाँवों-नगरों को आत्मसात करने लगा। इसी क्रम में ध्वस्त हो गये तीन-तीन परमाणु-रियेक्टर केन्द्र और आरम्भ हो गया अग्नि-ज्वालाओं का भीषण ताण्डव।

सन् 2004 में आयी सुनामी के ज़ख्म अभी भरे भी नहीं थे कि दुबारा लौट आयी सुनामी। दूरदर्शन के परदे पर भूकम्प-ज्वार और परमाणु-रियेक्टर केन्द्रों से उठती अग्नि-ज्वालाओं के इस समवेत आक्रमण को देखकर त्राहि-त्राहि कर उठा विश्व-मानव-समुदाय। वहाँ जापान के प्रभावित क्षेत्र फुकुशिमा से लाखों लोग जान बचाकर भागे, पचीसों-हजार काल-कवलित हुए। प्रलय की इस विभीषिका का सिलसिला अभी थमा भी न था कि विध्वस्त परमाणु-केन्द्रों से उठते धुँए के साथ फैलने लगा रेडियेशन। ऊर्जा-केन्द्रों से निकलने वाली इस रेडियोधर्मिता के प्रभाव में आकर पूरी तरह तबाह हो गया फुकुशिमा और क्रमश: इसकी चपेट में आ गयी जापान की राजधानी टोक्यो। लाखों लोगों की तबाही के बाद वृक्षों-वनस्पतियों एवं खाने-पीने की चीज़ों में भी संक्रमित हो चला यह रेडियेशन।

द्वितीय विश्व-युद्ध के दरम्यान सन् 1945 में मित्र-राष्ट्रों के परीक्षण-परक पारमाणविक-आक्रमण में नेस्तनाबूद हो गये थे जापान के हिरोशिमा और नागासाकी। उस ऐतिहासिक त्रासदी के लगभग 66 साल बाद प्रकृति की विनाशलीला के साथ-साथ जापान के अपने ही शक्ति-केन्द्रों ने फुकुशिमा को शिकार बनाया। यह महज़ एक दुर्घटना नहीं बल्कि सीधे-सीधे प्राकृतिक-संकेत अथवा संदेश है जिसके निहितार्थ वैज्ञानिकों को तलाशने होंगे। प्रकृति के इस संदेश से अब अछूते नहीं रह सकते यूरोप और एशिया के शक्तिशाली सत्ता-प्रतिष्ठान। यदि उन्हें अपने देश और जनता से सरोकार है, तो हमेशा की तरह अपने-अपने व्यावसायिक लाभ के लिये वे वैज्ञानिक-निष्कर्षों एवं सुझावों को खारिज नहीं कर सकते।

विगत एक-दो वर्षों के बीच दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर डरावने अन्दाज़ में आगामी प्रलय की घोषणाएँ की जाती रही हैं। माया-सभ्यता के कैलेण्डर और नोस्तेदोमस की भविष्यवाणियों के हवाले से कभी सन् 2012, कभी 2020, कभी 2032 के प्रलय-वर्ष की सूचना दी जाती रही है। यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या मृत्यु सूचना देकर आती है अथवा क्या महाप्रलय के तिथि-वर्ष निश्चित हैं ? यदि ऐसा है तो क्यों चल रहा है यह सांसारिक कार्य-व्यापार, किसके लिये है सभ्यता और संस्कृति के प्रगतिशील प्रतिमान, किसलिये हो रहे हैं वैज्ञानिक प्रयोग, आविष्कार एवं अनुसंधान ? इन प्रश्नों का उत्तर मानवीय-संकल्पों में निहित है जो अवसाद के क्षणों में भी पराजय नहीं स्वीकार करता और मृत्यु या प्रलय से भी टकराने का दुर्धर्ष साहस लेकर अन्तिम-क्षण तक जूझता है मनुष्य। महाप्रलय की विकराल-लहरों पर सवार होकर संतरण करता मानव पुन: सृष्टि

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

की संरचना करता है, विध्वस्त खँडहरों पर नया निर्माण करता है और पुन: अग्रसर हो चलता है सृष्टि-क्रम। इसी सिलसिले को घटित होते हुए हम फुकुशिमा के प्रलय में देख सकते हैं। जहाँ की विभीषिका में अपनों की अकाल-मृत्यु का अवसाद झेलते हुए मनुष्य ने ही परमाणु रियेक्टर से उठती ज्वालाओं को शान्त किया और रेडियेशन से मुक्ति के प्रयास में नव-निर्माण के संकल्प लिये।

जिस प्राकृतिक-संदेश की ओर हमने संकेत किया है उसके निहितार्थ खोजने की प्रक्रिया में हमें दूर जाने की ज़रूरत नहीं है। 'रियो-डि-जेनेरियो' से अब तक वैज्ञानिकों द्वारा 'पृथ्वी-सम्मेलन' में प्रस्तुत किये गये निष्कर्ष ही प्रकृति के विनाशक-सन्देशों का अर्थ स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त हैं। मनुष्य के ही विकास-आयोजन में अंधाधुंध प्राकृतिक-दोहन बार-बार खण्ड-प्रलय को आमन्त्रण दे रहा है। इसी वजह से बढ़ चला है धरती का तापमान, नष्ट हो चली है उसकी ऊर्वरा-शक्ति और रेगिस्तान का क्षेत्रफल बढ़ता जा रहा है। दूसरी ओर लगातार कम होता जा रहा है आपेक्षिक जल-स्तर, आल्प्स और हिमालय के ग्लैशियर पिघल रहे हैं, दक्षिणी और उत्तरी ध्रुवों के मिजाज़ गर्म होने लगे हैं, दुनिया के अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न नामों के तूफानी-चक्रवातों ने कहर बरपा कर रखा है। **इस तरह क्रमशः असंतुलित होते जा रहे पंच-महाभूत अपने अदृश्य किन्तु प्रत्यक्ष चैनल के माध्यम से भविष्य के उस महाप्रलय का सीधा सन्देश प्रसारित कर रहे हैं जिसका कारक-तत्त्व है मनुष्य की भोग-लिप्सा।** क्या यह सब देख-सुनकर भी न चेतेगा आदमी?

प्रकृति का सन्तुलन केवल मानव-शृंखला बनाकर जुलूस निकालकर, कैण्डिल-मार्च करके, पृथ्वी-दिवस, जल-दिवस जैसे आयोजन करके अथवा निबन्ध-प्रकाशन, भाषण, सांस्कृतिक-कार्यक्रम आदि द्वारा तो कदापि सम्भव नहीं। क्योंकि यह सब मानवीय-चेतना को झकझोर कर उसकी संवेदना को तो झनझना सकता है किन्तु सत्ता-प्रतिष्ठान इनसे प्रभावित नहीं होते। हमारे यहाँ गंगा को राष्ट्रीय-नदी का दर्ज़ा देने के बाद भी उस सिलसिले में केन्द्र और प्रान्तों का प्रशासन क्या कर रहा है, यह सबके सामने है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि दुनिया के सभी देशों में मानवीय-मूल्यों को केन्द्र में रखकर जन-सापेक्ष सत्ता की स्थापना हो ताकि पूँजीपरक प्राकृतिक-दोहन पर लगाम लगायी जा सके और वैज्ञानिक-उपलब्धियों का मनुष्य के लिये, मनुष्य द्वारा सुविचारित एवं सुनियन्त्रित प्रयोग किया जा सके, अन्यथा हमारी लब्धियाँ ही हमारे लिये विनाशक सिद्ध होंगी।

सृष्टि का शाश्वत नियम है परिवर्तन। इस खण्ड-प्रलय के बाद जापान में इन दिनों चारों ओर खूबसूरत चेरी के फूलों की बहार छायी है जिसे देखकर विषाद में भी उल्लास का संचार हो उठता है। इसके समानान्तर हमारे यहाँ देश के विभिन्न प्रान्तों में मकर-संक्रान्ति से वैशाख के बीच फसलों के पकने पर नया वर्ष मनाया जाता है। ओणम्, बीहु, वीशु, बैसाखी, विक्रमाब्द आदि इसी नूतन-शस्य का मुखर-उल्लास हैं। प्रलय की विभीषिका के बाद चेरी के फूलों की बहार प्रकृति की अपराजित-प्रेरणा है। नहीं! मनुष्य हार नहीं मानेगा, विषम-परिस्थितियों में भी वह खींच लायेगा जीवन का अमृत-रस! इसी आशा में तो फसलें लहलहा रही हैं, मुस्कुरा रहे हैं चेरी के फूल और नये-वर्ष की सन्धि-बेला में गुनगुना रहा है कवि-मन....

उषा सुनहले तीर बरसती
जयलक्ष्मी-सी उदित हुई,
उधर पराजित कालरात्रि भी
जल में अंतर्निहित हुई।

सर्वेक्षण

● **साखरनेटा / जैतापुर :** अग्रलेख की पंक्तियों में जिस विभीषिका को बयाँ करती हमारी लेखनी बार-बार काँपती रही है उसी की भूमिका सन् 2008 में हुए भारत-अमेरिका के परमाणु-समझौते में तैयार की गयी थी। इसी के तहत महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले के साखरनेटा गाँव से सिर्फ तीन किलोमीटर की दूरी पर समुद्र-तटीय भूकम्प सम्भावित क्षेत्र में जैतापुर परमाणु बिजली योजना प्रस्तावित है। साखरनेटा मछुआरों का गाँव है, यहाँ के लोगों की अपनी जीवनशैली में यह योजना विकास नहीं, व्याघात बनकर सामने आयी है। इसीलिये साखरनेटा और आसपास के प्रभावित गाँव के लोगों का आक्रोश मुखर हो उठा है। प्रान्तीय-प्रशासन के उत्पीड़न से जनांदोलन और उग्र हो उठा है। किसी भी तरह के सरकारी मुआवज़ेनुमा प्रलोभन को अस्वीकार करके पुरुषों के साथ-साथ औरतें और बच्चे भी इस आन्दोलन में शामिल हो चुके हैं। चेर्नोबिल के बाद फुकुशिमा की दुर्घटना से विचलित हुए जन-समुदाय के इस आक्रोश को अब कुचला नहीं जा सकता। वैसे भी कथित परमाणु-समझौते से सम्बद्ध अमेरिकन-मसौदे पर विपक्ष की आपत्तियों को दरकिनार करते हुए, विकास की चकाचौंध में जनता को गुमराह करने का जो षड्यंत्र रचा गया उसके छल-छद्म एक-एककर सामने आने लगे हैं। इस सरकार द्वारा जिस तरह विदेशी कम्पनियों के लिये चार-चार परमाणु-पार्क आरक्षित किये गये हैं, हो सकता है कि साखरनेटा की तरह सर्वत्र जनान्दोलन शुरू हो जायें। अत: ज़रूरी है कि राष्ट्रीय विकास के नाम पर राष्ट्रहित की बलि देकर किये गये इस समझौते की पुनर्समीक्षा की जाय।

●● **आरक्षण / संरक्षण :** जनता के समग्र-विकास से ज़्यादा वोट की राजनीति के चलते जिस तरह आरक्षण का दाँव खेला गया उससे वंचित समुदाय अब अपना हक़ माँगने लगे हैं। भारत की कथित वर्ण-व्यवस्था में पिछड़े होकर भी इन समुदायों के अस्सी-प्रतिशत लोग सम्पन्न हैं फिर भी वे आरक्षण चाहते हैं। अपना हक़ पाने के लिये वे रेल की पटरियों पर सत्याग्रह करते हैं, जनजीवन को अस्त-व्यस्त करते हुए देश की राजधानी को 'सील' कर देने की धमकी देते हैं। इस धमकी के यथार्थ का आकलन करने के बाद सरकार झुकती है और विचार के लिये आन्दोलनकारियों से एक महीने की मोहलत माँगती है। इस तरह आन्दोलन स्थगित हो जाता है। हम तो कहेंगे कि इस विशाल देश के हजारों समुदायों में से खोज-खोज कर सभी को दे दो आरक्षण, पक्के कर लो अपने-अपने वोट। किन्तु फिर बचे-खुचे अनारक्षित / बल्कि कहा जाय तो अनागरिक कहाँ जायेंगे, कौन देगा हमें संरक्षण?

नित्य नूतन विक्रमाब्द की
शुभाशंसाओं के साथ—

काले वर्षतु पर्जन्य: पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितो सज्जना: सन्तु निर्भया:॥

—परागकुमार मोदी

जाति : स्वाभिमान का विषय

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

जाति के विषय में गहराई से सोचता हूँ। सोचता हूँ कि यदि सारी फसाद की जड़ जाति ही है तो क्यों न इससे पिण्ड छुड़ा लिया जाय? परन्तु पिण्ड छुड़ाने का कोई उपाय तो हो? उपाय होता तो त्रेता-द्वापर में ही समाज ने यह काम कर लिया होता। वाल्मीकि रामायण में सन्दर्भ है कि जब कुमार भरत केकय से लौट कर अयोध्या आते हैं तथा राम वनवास एवं पितृमरण सुन कर, क्षुब्ध होकर राजा बनना अस्वीकार कर देते हैं तब बड़े-बूढ़ों के साथ ही, सारी प्रजा उन्हें समझाती एवं प्रार्थना करती है।

इस प्रजा में, उस युग की सारी जातियाँ सम्मिलित हैं—धानुष्क, याष्टीक, कारु, सूत्रकार, लौहकार, स्थपति, नट-नर्तक, शैलूष, शौण्डिक, पाणविक, ऐन्द्रजातिक। और भी न जाने कितने किन-किन वर्गों के लोग। भरत की चित्रकूट-यात्रा में भी इन विविध वर्गों की परिगणना है। महाभारत तो स्वयुगीन समाज को प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण ही है। परन्तु इस इतिहास-ग्रन्थ में भी तद्युगीन समाज को यथावत् प्रस्तुत किया गया है।

यदि भगवान् व्यास को यह भान होता कि अब से तीस-पैंतीस सौ वर्ष बाद भारत के लोग जीवन को देवत्व की सीमा तक पहुँचाने की बजाय जाति से पिण्ड छुड़ाने की यातना में समय नष्ट करेंगे तो शायद वह अपने पिता महर्षि पराशर को एक धीवर-कन्या से सम्बद्ध न करते, क्योंकि वह उनकी अपनी जन्मदात्री थी। अपनी माँ को भला कौन कलंकित करना चाहेगा?

परन्तु तब के समाज में ऐसा कुछ नहीं था। जातियाँ थीं, जातियाँ अनिवार्य थीं क्योंकि वे मनुष्य की सामाजिक पहचान का साधन थीं। अतः कर्ण के कवच-कुण्डल की तरह वे मानव के व्यक्तित्व से अन्तः सम्पृक्त थीं। जाति और व्यक्ति में संयोग नहीं, समवाय-सम्बन्ध था। इसीलिये, उस युग में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जाति का स्वाभिमान था। जाति के कारण किसी में हीनभावना नहीं थी, न ही जाति के कारण किसी में उच्च होने का अहंकार था। यदि किसी में यथार्थतः यह थोथा जातीय दम्भ था भी तो उसे समाज में सन्तुलित नहीं माना जाता था।

भगवान् राम जानते हैं कि शबरी के गुरु महर्षि मतङ्ग द्विज-वंश के नहीं हैं। वह अन्त्यजकुलोत्पन्न तपस्वी थे। तथापि समदर्शी, सर्वानुग्रही राम उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने, उनके आश्रम तक जाते हैं, जहाँ उनकी भेंट शबरी से होती है। महाभारत में भी उल्लेख है कि राजनय एवं धर्मतत्त्व की शिक्षा के लिए, धर्मराज युधिष्ठिर व्याध एवं तुलाधार वैश्य के पास जाते हैं पितामह भीष्म की प्रेरणा से।

जाति का दर्शन क्या है? जरा ठण्डे दिल से सोचिये। उन सारे पक्षों को अभी दूर रखिये जिनके कारण जाति 'मुन्नी' की तरह बदनाम हुई है। क्योंकि जाति को बदनाम करने वाले भी आप ही हैं। उसे नीच-ऊँच, निर्गुण-सगुण, ग्राह्य-अग्राह्य, प्रशंसनीय-निन्द्य मनुष्य ने ही बनाया है अन्यथा कोई भी जाति स्वयमेव अर्थात् प्रकृत्या ऐसी नहीं है। भाई, जैसे कवि कविता लिखता है वैसे ही स्थपति भवन बनाता है। न कवि हाथ में करनी-वसूली थामने की क्षमता रखता है और न ही स्थपति हाथ में लेखनी धारण करने की। जो धानुष्क है वह धनुष ही बनायेगा और जो 'अग्निजीवी' है वह खड्ग ही बना पायेगा। ऐसा इसलिये कि वह कला, वह शिक्षा उसके रक्त में है, उसके संस्कार में है। वह उसका कुलयामागत हुनर है जो उसे बाप-दादों से मिला है। अब वही कला उसकी सामाजिक-पहचान का साधन बन गई है। उसी पहचान का उसे स्वाभिमान है।

जब कोई व्यक्ति पैदा होता है, थोड़ा बड़ा होता है, प्रबुद्ध होता है तभी उसे अपने सामाजिक-प्रत्यभिज्ञान का बोध होने लगता है। वह अनुभव करने लगता है कि विशाल सामाजिक संरचना में उसका क्या अस्तित्व है। उसे लोग उसके किस कार्य, व्यापार, कला अथवा व्यवसाय से जानते-पहचानते हैं। उसका वह वैशिष्ट्य ही उसकी 'जाति' बन जाता है। अब, यदि किन्हीं कारणों से आपको अपनी जाति पसन्द नहीं है तो आप उसे मिटाना चाहेंगे, उससे सम्बन्ध तोड़ना चाहेंगे, उससे दूर भागना चाहेंगे, किसी और प्रदेश में जाकर नया जीवन शुरू करना चाहेंगे। परन्तु सावधान!

अजी, रूठ करके कहाँ जाइयेगा
जहाँ जाइयेगा हमें पाइयेगा!!

बाहर जाकर यदि आपने ड्राइविंग सीखी, किसी प्राइवेट कम्पनी में ट्रक चलाना प्रारम्भ कर दिया तो समाज आपको 'ड्राइवर' कहना प्रारम्भ कर देगा। आदर भी देगा तो 'ड्राइवर साहब' या 'ड्राइवर-बाबू' कहेगा। आपके बच्चे को भी देखते ही कहेगा—'अरे यह तो मेरे पड़ोस वाले ड्राइवर का लड़का है।' याद रखें, कोई भूलकर भी आपके बच्चे को 'प्रोफेसर का बेटा या खलासी का बेटा' नहीं बतायेगा। समाज बेहद ईमानदार है। वह आपको न ऊपर चढ़ायेगा, न ही नीचे गिरायेगा। आप जहाँ हैं अपने पुरुषार्थ से, आपको वहीं रखेगा। आप जो हैं, आपको वही कहेगा। तो फिर, प्रिय बन्धुओं! जाति से चिढ़ क्यों? वैर क्यों? विद्वेष क्यों?

इन दिनों अपने राष्ट्र में तूफान-सा मचा है 'जाति' को लेकर। नई जनगणना में व्यक्ति की 'जाति' भी अंकित की जा रही है। हमारे अधकचरे ज्ञान के धनी, लतमरुवे सांसद जाति के पक्ष-विपक्ष में काफी कुछ कह चुके हैं, जिसमें कोई दम नहीं है। क्योंकि उनकी सारी बयानबाजी ही इस बात पर निर्भर होती है कि इस पूरे प्रकरण में वे कहाँ हैं? केन्द्र में या हाशिये पर, या फिर पूर्णतः नदारद! यदि इस प्रकरण से न उनका लाभ है न हानि, तो वे बोधिसत्त्व बन कर उदासीन या तटस्थ बने बैठे रहते हैं। वस्तुतः वे मात्र अपने (स्वार्थ के) लिये लड़ते हैं, न कि समाज या राष्ट्र के लिये।

परन्तु मेरी दृष्टि में 'जाति' को लेकर विवाद करना निहायत मूर्खता है क्योंकि जाति की अनिवार्यता के बावजूद, भारत में सदा-सदा से ही 'गुणाः पूजास्थानम्' का भाव प्रधान रहा है। अपने सद्गुण के ही कारण मानव ने समाज में पूरा अक्षय यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की है। राष्ट्रपिता बापू तो जात्या वणिक् थे परन्तु आज सम्पूर्ण राष्ट्र उन्हें देवदृष्टि से देखता है। गुरुनानक, दादूदयाल, कबीर, रैदास, रसखान तथा महाराष्ट्र के अनेक सन्त तो ब्राह्मण नहीं थे। फिर भी उन्होंने क्या परमात्म-साक्षात्कार नहीं किया, क्या वे ऋषि-महर्षि नहीं सिद्ध हुए?

वस्तुतः जाति के बारे में सोचना ही एक खण्डित चिन्तन है, एक अपूर्ण चिन्तन है। तथाकथित ऊँची जाति का अहंकार तथा सामान्य जाति की वेदना दोनों ही मानसिक-पाप की उपज है। ये दोनों ही प्राणी कृपापात्र हैं, सहानुभूति के पात्र हैं। इनमें आत्मस्वाभिमान की, आत्मविश्वास की कमी है। फलतः ये सीधी लड़ाई न लड़ कर, जाति के कन्धे पर बन्दूक रख कर, झूठी लड़ाई लड़ रहे हैं। भारत में जाति का सन्दर्भ कितना महत्त्वहीन रहा है इसे हम निषाद, जटायु, मतंग, शबरी, विदुर, रविदास आदि के जीवन से जान सकते हैं। वर्तमान युग में भी बाबा रामदेव-सरीखे राष्ट्रसन्त उसी परम्परा के ज्वलन्त प्रतीक हैं। किस महामण्डलेश्वर या शङ्कराचार्य से कम प्रतिष्ठा है योगर्षि रामदेव की? कम से कम एक सन्त तो ऐसा है भारत में जो भारत का भला सोच रहा है?

मैं तो यही सब सोचते-सोचते स्वयं पर उतर आता हूँ। दयालु परमेश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि यदि यही बुद्धि, यही सारस्वत-सपर्या, यही सहिष्णुता, यही परदुःखकातरता मुझे अगले जन्म में भी मिले तो हे करुणानिधान जिस किसी भी जाति या कुल में जन्म दे देना। मैं अब से भी कहीं अधिक प्रसन्न रहूँगा (बशर्ते मेरी इस जन्म की स्मृति बनी रहे) किसी भी श्रेष्ठ (?) जाति के सिर पर सुर्खाब के पर नहीं लगे हैं। मनुष्य मात्र अपने सद्गुणों एवं सत्कर्मों से महान बनता है, जाति-मात्र से नहीं।

आप बाभन, ठाकुर, चमार, पासी, कुम्हार,

शेष पृष्ठ 4 पर

बीबीसी का टिमटिमाता दीया

—डॉ० गौतम सचदेव

बीबीसी हिन्दी सेवा के रेडियो प्रसारणों का दीया धीरे-धीरे बुझता जा रहा है। जल्दी ही उसके चार दैनिक प्रसारणों के स्थान पर केवल एक प्रसारण रह जाएगा—एक घण्टे का सायंकालीन प्रसारण, जो वर्तमान में 'दिन भर' के नाम से प्रसारित होता है। अभी ज्यादा समय नहीं गुजरा जब ताजा, तात्कालिक और विश्वसनीय समाचारों, समकालीन घटनाचक्र के विवेचनों और हिन्दी रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में बीबीसी हिन्दी सेवा का कोई सानी नहीं था। उसके श्रोताओं की संख्या करोड़ों में थी। बीबीसी ने भी अपनी तरफ से इस दायित्व का पूरा-पूरा निर्वाह किया और भारत-चीन युद्ध, भारत-पाक युद्ध, बंगलादेश का स्वतन्त्रता संग्राम, इन्दिरा गाँधी द्वारा लगाई इमरजेंसी, भिंडरावाला काण्ड और इन्दिरा गाँधी की हत्या जैसी असंख्य घटनाओं के बिल्कुल सही समाचार दिये तथा उनका गहन विश्लेषण किया। यूँ तो बीबीसी रेडियो प्रसारणों की साख और लोकप्रियता हमेशा से रही है, लेकिन ट्रांजिस्टर के आने से इसमें चार चाँद लग गए थे। श्रोता खेतों, खलिहानों, दफ्तरों, दुकानों, गाड़ियों और नौकाओं तक में बीबीसी रेडियो की सूई घुमाते नजर आते थे। स्कूलों-कॉलेजों के विद्यार्थी और अध्यापक बड़े शौक से बीबीसी सुनकर अपने ज्ञान में वृद्धि करते थे और लाखों की संख्या में प्रशंसा एवं धन्यवाद के पत्र लिखा करते थे। लेकिन देखते-देखते बीबीसी हिन्दी रेडियो निस्तेज होने लगा और हालत यह हो गई कि बीबीसी की ओर से इसे मार्च के महीने के अन्त में बन्द कर देने की घोषणा कर दी गई। खैर, प्रशंसक श्रोताओं, बड़ी-बड़ी हस्तियों और बीबीसी के प्रसारकों के जबरदस्त आग्रह के कारण फिलहाल इसे एक वर्ष और जारी रखने का प्राणदान मिला है।

बीबीसी के हिन्दी रेडियो प्रसारण क्यों घटते जा रहे हैं, इसके कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण तो जाहिर है, आर्थिक ही है। भारी मन्दी के चलते ब्रिटेन की सरकार ने अपने खर्चों में बचत के लिए बीबीसी के 25 करोड़ 30 लाख पाउण्ड के बजट में भारी कटौती कर दी है और उसे 4 करोड़ 60 लाख पाउण्ड, यानी लगभग पच्चीस प्रतिशत की बचत करने के लिए बाध्य किया है। इसके फलस्वरूप वह विश्व की कई भाषाओं के प्रसारण पूरी तरह बन्द कर रही है, जैसे अजरी, मंदारिन (चीन के लिए), रूसी, स्पेनी (क्यूबा के लिए), तुर्की, वियतनामी और यूक्रेनी आदि। दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण है बीबीसी रेडियो की लोकप्रियता का लगातार घटते जाना। इसकी बहुत बड़ी वजह है भारत में हफ्ते के सातों दिन चौबीसों घण्टे समाचार देने और मनोरंजन करने वाले दर्जनों टीवी चैनलों का ज्वार-भाटा। इसके साथ ही गौर करने की बात यह है कि भारत के मीडिया जगत में भारी क्रान्ति आई है। कहाँ तो कुछ दशक पहले हिन्दी के स्तरीय समाचारपत्र भी अंग्रेजी के समाचारपत्रों के आगे बहुत हल्के पड़ते थे, कहाँ आज अकेले दैनिक जागरण जैसे हिन्दी के समाचारपत्र देश के 37 शहरों से प्रकाशित हो रहे हैं और उनके पाठकों की संख्या ने न केवल नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं, बल्कि अँग्रेजी के सारे समाचारपत्रों को पीछे छोड़ दिया है। कभी बीबीसी की लोकप्रियता का एक बहुत बड़ा कारण था, उसका लन्दन से होने वाला प्रसारण और उनमें मार्क टली जैसे अंग्रेज संवाददाताओं का अभूतपूर्व और स्मरणीय योगदान। जबसे प्रसारण लन्दन के बजाय दिल्ली से होने लगा है और उनमें केवल भारतीय पत्रकारों का ही योगदान होने लगा है, तब से भारतीय श्रोताओं के लिए लन्दन से हिन्दी सुनने की दिलचस्पी समाप्त हो रही है। यही नहीं, जिस तरह से बीबीसी ने अपने हिन्दी प्रसारणों को विश्व सेवा से अलग करके 'बीबीसी इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड' नामक निजी कम्पनी के अधीन किया है, उससे भी बीबीसी के श्रोताओं की संख्या काफी कम हुई है। बीबीसी हिन्दी सेवा जिस बीबीसी वर्ल्ड सर्विस रूपी वट वृक्ष का अंग है, उसे चलाने के लिए ब्रिटेन की सरकार का विदेश विभाग अनुदान देता है और इस अनुदान का आवंटन संसद द्वारा किया जाता है। इस नाते बीबीसी को विज्ञापनों आदि की व्यावसायिक गतिविधियों से धनोपार्जन करने की अनुमति नहीं है। विदेश विभाग की ओर से धन मिलने के बावजूद बीबीसी पर सरकार का कोई अंकुश नहीं है और उसे पूरी सम्पादकीय स्वतन्त्रता मिली हुई है। इसके विपरीत बीबीसी इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड या इसी के जैसी पाकिस्तान में स्थापित बीबीसी पाकिस्तान प्राइवेट लिमिटेड जैसी कम्पनियाँ व्यावसायिक गतिविधियों के लिए स्वतन्त्र है। जब कोई संस्था प्राइवेट व्यवसायों के हाथों में चली जाती है, तो स्वाभाविक रूप से उसके व्यावसायिक हित जनहितों से ऊपर हो जाते हैं और उसकी सम्पादकीय नीतियों को भी तदनुसार बदला जाता है।

यह सच है कि बीबीसी की हिन्दी ऑनलाइन सेवा अभी पूरी तरह सुरक्षित है, लेकिन जब हम उस सेवा की बीबीसी के रेडियो प्रसारणों से तुलना करते हैं, तो दोनों की पहुँच और लोकप्रियता का अन्तर साफ़ नजर आने लगता है। बीबीसी के रेडियो प्रसारणों के श्रोता महानगरों की तुलना में गाँवों और कस्बों में बहुत ज्यादा हुआ करते हैं। उन्होंने कई स्थानों पर बीबीसी रेडियो श्रोता क्लब तक बना रखे थे और वे सामुदायिक रूप से रेडियो सुनते थे। कई स्थानों की ग्राम पंचायतों, स्कूलों और कॉलेजों तक में बीबीसी के 'हमसे पूछिए' और 'आजकल' जैसे कार्यक्रमों को सामूहिक रूप से सुना जाता था। इंटरनेट के आने से श्रोताओं की यह पारिवारिक और सामूहिक भागीदारी समाप्त हो गई और श्रोताओं का प्रसारित सामग्री पर आपस में संवाद और वाद-विवाद करना भी समाप्त हो गय। बीबीसी व्यक्ति-केन्द्रित हो गई। जिन लोगों को बीबीसी के अधिकांश प्रसारणों के बन्द होने से तकलीफ हो रही है, उनका इन्हें जारी रखने के लिये आग्रह करना केवल अतीतमोह या नॉस्टेल्जिया नहीं है, बीबीसी से अथाह प्रेम है। **—दैनिक जागरण से साभार**

पृष्ठ 3 का शेष

तेली, लोहार, सोनार, जाट, महार आदि नामों को सुनना तक नहीं चाहते हैं। परन्तु नये जमाने की नई जातियों के बारे में आपके क्या विचार हैं—टेलरमास्टर, शू-मेकर, बार्बर, ड्राइवर, क्लीनर, डॉयर, प्लम्बर, इलेक्ट्रीशियन, मैकेनिक, स्वीपर, कैटरर, बैरा, रिसेप्शनिस्ट आदि। ये सब क्या कार्यपालिका, न्यायपालिका या शिक्षा क्षेत्र के बड़े पद हैं? या फिर अंग्रेजी भाषा के शब्द होने के कारण इनमें चम्पे की भीनी सुगन्ध रच-बस गई है? इनसे तो आपको कोई परहेज नहीं। स्वीपर कहलाने में ऐंठ और स्वाभिमान और पारम्परिक दृष्ट्या भंगी कहलाने में द्वेष? यहाँ कौन विवेक है? कौन न्याय है यहाँ? रेलवे-स्टेशन के प्रसारणों में प्रतिक्षण सुनता हूँ सफाई कर्मचारी...स्वीपर तुरन्त अमुक गाड़ी को अटेण्ड करें? वहाँ तो कोई विरोध या प्रदर्शन करता! बेचारा उद्घोषक भी क्या करे? स्वीपर को और किस नाम से बुलाये? यह भी तो नहीं कह सकता कि फलाँ ट्रेन में बड़ी गन्दगी है, टी०टी० तुरन्त अटेण्ड करें। क्यों नहीं कह सकता? इसलिए कि बाथ-लैट्रिन की सफाई टी०टी० का काम नहीं है ठीक यूँ ही जैसे टिकट की जाँच-पड़ताल करना स्वीपर का काम नहीं।

इसलिये निरर्थक लड़ाई मत लड़ो। यह शक्ति का, बुद्धि का, चिन्तन का अपक्षय है। यदि व्यक्ति शाश्वत है तो उसकी जाति भी शाश्वत है। जाति शक्ति है और व्यक्ति शक्तिमान् यदि जाति शक्ति न होती तो आरक्षण को लेकर मीणा या जाट-आन्दोलन की सार्थकता क्या थी? मीणा लोगों के साथ ब्राह्मण और राजपूत तो नहीं बैठे धरने पर? जाटों के साथ और लोग तो शामिल नहीं हुए आन्दोलन में? इससे सिद्ध है कि प्रत्येक व्यक्ति की जाति ही उसकी अन्तर एवं बाह्य—दोनों शक्ति है। इस शक्ति का प्रयोग हमें राष्ट्रोत्थान में करना चाहिये। प्रत्येक जाति स्तुत्य है, वन्द्य है, समादरणीय है बशर्ते वह महात्मा फुले एवं अम्बेडकर के समान लोकनायक पैदा करे, दद्दा मैथिलीशरण गुप्त जैसा कवि पैदा करे, कीलर-बन्धु एवं हमीद जैसा सेनानायक पैदा करे। वस्तुत: व्यक्ति से जाति यशस्विनी बनती है, जाति से व्यक्ति यशस्वी नहीं बनता।

योगिराजाधिराज श्री श्री विशुद्धानन्द परमहंस

अक्षयकुमार दत्त गुप्त कविरत्न

'' यह ग्रन्थ एक दैनन्दिनी (डायरी) के समान है। महापुरुष की नित्यप्रति की घटनाएँ इसमें सँजोई गयी हैं। वर्णन-शैली रोचक तथा भावपूर्ण है। यह निश्छल-निष्कपट भाव का तथा भक्तिपूर्ण हृदय का उद्‌गार है। इसलिए यह सार्वजनीन है, क्योंकि इस प्रकार के भाव सबके अन्तरतम का स्पर्श करते हैं, पाठक का संवेग भी लेखक के भाव में भावित तथा आकारित हो जाता है। यही यथार्थ जीवनी की, 'चरितकथा' की कसौटी है।

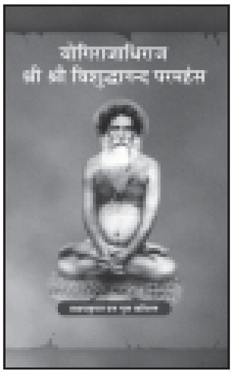

आकार डिमाई

पृष्ठ 396 + 16 पृष्ठ चित्र

सजिल्द : 978-81-7124-753-0 • रु० 400.00
अजिल्द : 978-81-7124-754-7 • रु० 225.00

(पुस्तक का एक अंश)

पहले वर्ष ही काशी में अपनी दीक्षा के प्रसंग में अपनी स्त्री की दीक्षा की प्रार्थना बाबा से की। तदनन्तर कलकत्ता में मेरी स्त्री तथा मैंने बाबा के श्री चरण में यही निवेदन एकाधिक बार किया। प्रत्येक बार बाबा ने यह कहा कि दीक्षा दूँगा, तथापि दीक्षा का दिन निश्चित करने में विलम्ब हो गया। सामने मेरी कन्या के वियोगरूप एक घटना होनी थी, यही देखकर उन्होंने विलम्ब किया और यह एक परीक्षा भी थी। मेरी पत्नी शोकावेग में यह सोच सकती थीं कि इन्होंने शक्तिमान योगी होने पर मेरी कन्या की रक्षा हेतु कुछ नहीं किया। इनसे दीक्षा लेकर क्या होगा? प्रकृत पक्ष से शोक के आघात से मेरी स्त्री का तो दीक्षा हेतु और भी आग्रह वर्द्धित हो गया तथा कन्या की मृत्यु के उपरान्त बाबा के मुख से सान्त्वना-वाक्य सुनकर उनके स्नेह, दया से वे मुग्ध हो गयीं। पहले ही कहा था एक दिन बाबा ने कहा कि—''पूजा में काशी आना। वहाँ शान्ति मिलेगी। दीक्षा भी वहीं होगी।'' बाबा का आदेश शिरोधार्य करके मैंने पूजा तथा बड़े दिन के अवकाश के मध्यवर्त्ती छुट्टी के लिए दरखास्त दी और छुट्टी मिल गयी। इसी समय कुमारी-भोजन के प्रसंग में बाबा ने बताया कि ज्ञानगंज में बहुत-सी कुमारियाँ हैं।

मैं—''वहाँ इतनी कुमारियाँ कहाँ से आती हैं?''

बाबा—''उस देश के लोग एक पुत्र को साधु तथा एक कन्या को ब्रह्मचारिणी बना देते हैं। ये लोग आश्रम में योग, ब्रह्मचर्य आदि की शिक्षा पाते हैं। कुमारियाँ तीन-चार हजार हैं। इन कुमारी माँ तथा भैरवी माँ की सेवा के लिए मैं प्रतिमास 500 रुपये भेजता हूँ। इसमें से 250 रुपये मैं देता हूँ और 250 रुपये अनेक शिष्य चन्दा से देते हैं।''

जिस दिन यह बात हो रही थी, बाबा के पास तीन बनारसी साड़ियाँ देखी गयीं। बाबा ने कहा यह कुमारी सेवार्थ ज्ञानगंज भेजी जायेंगी।

ज्ञानगंज में कुछ भेजने की व्यवस्था के सम्बन्ध में यह सुना कि ज्ञानगंज के एक साधु जालन्धर में हैं। पत्र-पार्सल-मनीऑर्डर सब उन्हें भेजा जाता है। बाबा जालन्धर से जो सब पत्र ज्ञानगंज के प्राप्त करते, सब पर जालन्धर पोस्ट ऑफिस की मुहर रहती। बाबा के शरीरान्त के उपरान्त मैंने गोपीनाथ रक्षित ज्ञानगंज की एक मूल चिट्ठी के (लिफाफा पर) डाक टिकट पर जालन्धर की मुहर देखी। पहले जो व्यवस्था बतलाई गयी, वह साधारण व्यवस्था थी। असाधारण व्यवस्था अलग से थी उसे प्रसंग आने पर कहा जायेगा।

महालया के दिन प्रात: आह्निक तथा तर्पण का समापन करके बाबा का चरण-दर्शन करने जाने पर दो रुपये प्रणामी के साथ ज्ञानगंज की कुमारी तथा भैरवी माता के लिए 20) तथा चार आना मनीऑर्डर कमीशन दिया। इस दिन बाबा योगेश दादा के घर में थे। वहीं कुमारी-भोजन हुआ था। मैंने भी प्रसाद पाया। इसके कुछ समय पश्चात् बाबा का भोग हुआ। भोगान्त में बाबा बैठकखाना में आकर पान खाते-खाते शिष्यों के दिये पुष्पों में से दो गुलाब बाहर करके बोले—''यह स्त्रीजातीय गुलाब है, यह पुरुषजातीय गुलाब है।'' तदनन्तर इनसे कुछ पराग लेकर अपनी मुट्ठी में बन्द करके वायु में संचालित करके उसे एक गुलाब की कली में परिवर्तित कर दिया। यह वायुविज्ञान की क्रीड़ा थी। बाबा वैज्ञानिक Demonstration को खेल ही कहते थे। तदनन्तर उन्होंने कहा—''यदि कुमारी खिलाओ, तब एक बहुत बड़ा गुलाब तैयार कर दूँगा।''

मैं—''यदि दश कुमारी भोजन से काम चले तो मैं राजी हूँ।'' बाबा ने कहा—''दश से काम नहीं चलेगा।'' अत: कली, कली ही रह गई। इस दिन बाबा ने 4 प्रकार की दीक्षा की बात कही।

(1) मन्त्र-विचार से दीक्षा, (2) कर्त्तव्योपदेशमूलक दीक्षा, (3) बीज उद्धारपूर्वक दीक्षा, (4) देवता-प्रदर्शन से दीक्षा।

बाबा कहते, जो दीक्षा मुझे दी गयी है वह प्रथम दीक्षा है। दीक्षा के पूर्व रात्रि में बाबा शिष्य के तीन जन्मों अथवा अधिक का विचार करके उसके साधन-इतिहास की पर्यालोचना करके मन्त्र-निर्णय करते थे। विचार का कोई दोष होने पर इस प्रकार से पकड़ में आता था—दीक्षा के आयोजन में कुमारी को जो वस्त्र तथा घृत दिया जाता, मन्त्र-निर्णय के समय उस वस्त्र पर घृत की कटोरी रखी जाती। इस कटोरी पर मन्त्रोच्चारण करने से घृत उद्‌वेग द्वारा उबलने जैसा हो जाता। विचार-दोष होने पर इस समय वस्त्र जलने लगता। बाबा ने बताया कि आजतक उन्होंने हजारों शिष्यों को दीक्षा दी। किन्तु मन्त्र-विचार की त्रुटि से दो-चार बार ही वस्त्र में आग लगी है।

22वें आश्विन को घर में स्थित सभी को तथा ढाका से आगत भाई अमूल्य, भातृवधू तथा मानिकगंज से आगत बड़ी बहन को साथ लेकर काशी गया। बाबा भी इसी दिन इसी गाड़ी से काशी जा रहे थे। ट्रेन थी पूजा स्पेशल जो सुबह 9 बजे काशी पहुँची। सुबह कहीं जब ट्रेन रुकी थी, तब हम सबने बाबा के डिब्बे में जाकर उनको प्रणाम भी किया था। मेरे लिए गोपीनाथ ने अपने बड़ादेव-स्थित आवास के पास हौजकटोरा में एक मकान किराये पर लिया तथा मेरे साथ परम आत्मीयता होने के कारण मेरे लिए प्रयोजनीय बहुत-सा सामान भी खरीद कर रख दिया था। मध्याह्न-भोजन काशी पहुँचने पर गोपीनाथ के ही गृह पर हुआ। तदनन्तर नूतन स्थान में गृह की व्यवस्था में लगा। उस दिन आश्रम नहीं जा सका। अगले दिन सप्तमी की पूजा थी। उस दिन प्रात: ही बाजार इत्यादि से खाली हो गया। तदनन्तर नृपेन्द्र चौधरी दादा को आश्रम की ओर जाते देखकर यह नहीं सोचा कि मुझे भी जाना चाहिए। जब दोपहर के पश्चात् आश्रम गया तब बाबा ने कहा कि सुबह प्रसाद खाने क्यों नहीं आये? कोई उत्तर न दे सका। उपस्थित गुरु भ्रातागण की बातों से भी मैं लज्जित हो गया। मैं नीरव था। वास्तव में घर की झंझट के कारण मुझमें कर्त्तव्य-बोध का अभाव हो गया। बिना बुलाये वहाँ जाकर प्रसाद-ग्रहण में संकोच होना भी एक कारण था। इस सबसे मैंने मौन ही रहना उत्तम समझा। अन्तर्दर्शी बाबा से कुछ अज्ञात नहीं रहता। उन्होंने आदेश दिया—''कल तथा परसों यहीं प्रसाद पाओ, बहूमां को भी ले आना।'' एकाधिक बार उन्होंने आदेश दिया। अत: प्रकृत कारण (मैं क्यों नहीं आया) उनसे अविदित नहीं था।

पाँच वर्षों से काशी में दुर्गापूजोत्सव होता रहता था। ....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

डॉ० विश्वनाथ तिवारी को व्यास सम्मान

के०के० बिरला फाउण्डेशन के 2010 के प्रतिष्ठित व्यास सम्मान के लिए प्रख्यात लेखक डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को चुना गया है।

उन्हें यह सम्मान 2008 में प्रकाशित उनके सातवें काव्य संग्रह 'फिर भी कुछ रह जाएगा' के लिए दिया जायेगा

पुरस्कार में डॉ० तिवारी को ढाई लाख की राशि दी जाएगी। डॉ० तिवारी व्यास सम्मान पाने वाले बीसवें साहित्यकार होंगे।

काशीनाथ सिंह को 'कर्पूरी ठाकुर पुरस्कार'

वाराणसी। प्रसिद्ध कथाकार डॉ० काशीनाथ सिंह को बिहार सरकार ने जननायक कर्पूरी ठाकुर पुरस्कार के लिए चयनित किया है। इसके अन्तर्गत एक लाख रुपये नकद मिलेंगे। इन दिनों उनके उपन्यास 'काशी का अस्सी' पर डॉ० चंद्रप्रकाश द्विवेदी 'मोहल्ला अस्सी' नाम से फिल्म बना रहे हैं।

गिरधर राठी को बिहारी सम्मान

प्रसिद्ध कवि गिरधारी राठी को वर्ष 2010 के बिहारी पुरस्कार के लिए चुना गया है। के०के० बिरला फाउण्डेशन की ओर से राठी को यह सम्मान उनकी कृति 'अंत के संशय' के लिए दिया जा रहा है। पुरस्कार के अन्तर्गत राठी को एक प्रशस्तिपत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख रुपये की राशि देकर सम्मानित किया जाएगा।

उर्दू के कद्रदान हुए सम्मानित

लखनऊ, उर्दू के कद्रदानों का विगत 18 मार्च 2011 को सम्मान किया गया। उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी के तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में पाँच श्रेणियों में दस विद्वान् पुरस्कृत हुए। इसमें लखनऊ के प्रो० वलीउल हक अंसारी को पाँच लाख रुपये के 'मौलाना अब्दुल कलाम आजाद राष्ट्रीय पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया।

शुभदा पाण्डेय सम्मानित

नागपुर (महाराष्ट्र) की 'महात्मा फुले प्रतिभा संशोधन अकादमी' ने वर्ष 2011 में साहित्यकार शुभदा पाण्डेय (असम विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रकोष्ठ में कार्यरत) को 'अमृता प्रीतम राष्ट्रीय साहित्यिक सम्मान' से सम्मानित किया है।

यह सम्मान उनकी सतत साहित्य साधना व अनेक उपलब्धियों के परिप्रेक्ष्य में प्रदान किया गया है। उनकी अनुपस्थिति में यह सम्मान उनके पति प्रो० नित्यानन्द पाण्डेय ने ग्रहण किया। इसके अन्तर्गत उन्हें शॉल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति-चिह्न आदि प्रदान किया गया।

हेमंत फाउण्डेशन के पुरस्कार घोषित

मुम्बई, वर्ष 2010 का विजय वर्मा कथा सम्मान युवा लेखक मनोज कुमार पाण्डेय (लखनऊ) के कथा संग्रह 'शहतूत' पर तथा हेमंत स्मृति कविता सम्मान युवा कवयित्री वाजदा खान (दिल्ली) के कविता संग्रह 'जिस तरह घुलती है काया' पर देने का निर्णय लिया गया है।

इन पुरस्कारों के अन्तर्गत ग्यारह हजार रुपयों का मानधन, शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न 23 अप्रैल 2011 को समारोह पूर्वक प्रदान किया जाएगा।

हिन्दी-सम्मान

सूचना और प्रसारण मन्त्रालय ने पहली बार हिन्दी साहित्य सम्मान प्रदान किये हैं। मन्त्रालय के सचिव रघु मेनन ने विगत दिनों एक समारोह में मन्त्रालय की विभिन्न इकाईयों में काम कर रहे हिन्दी साहित्यकारों को सम्मानित किया। आकाशवाणी दिल्ली के केन्द्र निदेशक लक्ष्मीशंकर वाजपेयी और समाचार सेवा प्रभाग में उपनिदेशक राजेन्द्र उपाध्याय, दूरदर्शन के अमरनाथ अमर सहित कुल नौ अधिकारियों को हिन्दी साहित्य सम्मान दिया गया।

डॉ० पाल को 'दानवीर कर्ण फैलोशिप'

अखिल भारतीय अंगिका साहित्य विकास समिति के वार्षिकोत्सव 'अंगिका दिवस 2011' में प्रख्यात साहित्यकार एवं समीक्षक डॉ० हरिसिंह पाल को 'दानवीर कर्ण फैलोशिप-सम्मान' से समलंकृत किया गया। सम्मान के रूप में उन्हें प्रशस्ति पत्र, शॉल, सम्मानित राशि एवं पुष्पमाला तथा साहित्य प्रदान किए गए।

कथाकार डॉ० सूर्यबाला सम्मानित

विगत दिनों प्रख्यात कथाकार, व्यंग्यकार डॉ० सूर्यबाला को 'डॉ० राममनोहर त्रिपाठी साहित्य सम्मान' प्रदान किया गया। इस अवसर पर मराठी भाषा के श्री मगेश पद्‌गओंकर, गुजराती की सुश्री धिरुबें पाटिल, उर्दू के श्री हसन कमाल, पंजाबी के श्री जगजीत सिंह एवं सिंधी के श्री दयाल आशा भी सम्मानित हुए। महाराष्ट्र विधान सभा अध्यक्ष श्री दिलीप वलसे पाटिल ने सभी रचनाकारों को शॉल, पुष्पगुच्छ तथा मानपत्र देकर सम्मानित किया।

श्री शिवसागर को 'गीत शिरोमणि सम्मान'

विगत दिनों हाथरस में हुए एक भव्य काव्य समारोह में कवि श्री शिवसागर को 'गीत शिरोमणि सम्मान' से विभूषित किया गया। श्री कृष्णलाल गो-सेवा न्यास की ओर से हास्य कवि मामा हाथरसी ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया।

रोटरी राजभाषा सम्मान समारोह सम्पन्न

विगत दिनों रोटरी क्लब दिल्ली अपटाउन और शब्द-सेतु के सहयोजन से रोटरी राजभाषा सम्मान 2010 के अन्तर्गत शिखर सम्मान श्री बालशौरि रेड्डी और डॉ० वेदज्ञ आर्य को दिए गए। सर्वश्री वर्षादास, प्रताप सहगल, श्याम विमल, बलदेव सिंह बद्‌दन और मजीद अहमद को भी सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० महीप सिंह थे। डॉ० हरीश नवल ने अध्यक्षता की।

श्री प्रदीप पंत को 'व्यंग्यश्री सम्मान'

13 फरवरी को नई दिल्ली के हिन्दी भवन में प्रतिष्ठित 'व्यंग्यश्री सम्मान-2011' चर्चित व्यंग्यकार श्री प्रदीप पंत को एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। श्री पंत को कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, डॉ० गंगाप्रसाद विमल, वरिष्ठ कवि डॉ० शेरजंग गर्ग, श्री रामनिवास लखोटिया और डॉ० रत्ना कौशिक ने क्रमशः प्रशस्ति पत्र, शॉल, पुष्पहार, वाग्देवी की प्रतिमा, रजतश्रीफल और इक्यावन हजार रुपए की राशि देकर विभूषित किया।

वर्ष 2011 हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

भीलवाड़ा। बालसाहित्य उन्नयन हेतु 'बालवाटिका' द्वारा बालसाहित्य की समस्त विधाओं में नामित स्मृति पुरस्कारों की स्थापना की गई है। बालसाहित्य की विधाओं— कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक/एकांकी एवं अन्य विधाओं (जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत, संस्मरण आदि में से किसी एक को) की सर्वश्रेष्ठ कृति पर रुपए पाँच हजार एक सौ तथा बालसाहित्य के इतिहास, आलोचना/समीक्षा, बालसाहित्य शोध एवं राजस्थानी बालसाहित्य (किसी भी विधा में से एक) की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर दो हजार एक सौ रुपए की नकद राशि के पुरस्कार प्रदान किए जाएँगे। पुरस्कृत होने वाले रचनाकार को नकद राशि के साथ श्रीफल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न, शॉल आदि भेंट किए जाएँगे। अन्य नियमों एवं जानकारियों के लिये सम्पादक 'बालवाटिका' नंदभवन, कावाँखेड़ा पार्क, भीलवाड़ा (राजस्थान) - 311 001 से सम्पर्क करें। प्रविष्टि प्राप्ति की अन्तिम तिथि 31 मई 2011 है।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

हिन्दी साहित्य परिषद् अहमदाबाद द्वारा संचालित 'डॉ० सी०एल० प्रभात शोध समीक्षा पुरस्कार न्यास' के तत्वावधान में प्रति तीसरे वर्ष दिये जाने वाले 'डॉ० सी०एल० प्रभात शोध समीक्षा पुरस्कार' हेतु वर्ष 2011 के लिए शोधात्मक एवं समीक्षात्मक हिन्दी कृतियाँ आमंत्रित हैं। प्रतियाँ 30 जून, 2011 तक डॉ० रामकुमार गुप्त (कोषाध्यक्ष), हिन्दी साहित्य परिषद् 2, अमर आलोक अपार्टमेंट, बालवाटिका, मणिनगर, अहमदाबाद-380008 के पते पर भेजें।

श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा एवं श्री मनोज को 'वनमाली सम्मान'

भोपाल में साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में समान रूप से सक्रिय वनमाली सृजन पीठ द्वारा स्थापित 'वनमाली सम्मान' प्रख्यात उपन्यासकार श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा को उनके समग्र लेखकीय अवदान तथा सुपरिचित युवा कथाकार श्री मनोज रूपड़ा को कहानी लेखन के लिए दिया गया। सम्मान स्वरूप मैत्रेयी पुष्पा को 51 हजार रुपये तथा मनोज रूपड़ा को 31 हजार रुपये की राशि के साथ शॉल, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक-चिह्न भेंट किये गये।

संस्कृति सम्मान समारोह

साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था राष्ट्र-किंकर द्वारा आयोजित मकर संक्रान्ति के अवसर पर संस्कृति सम्मान समारोह का आयोजन दिल्ली स्थित साहित्य कला परिषद् सभागार में लिया गया जिसमें देश-विदेश से पधारे विद्वानों ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने का भी संकल्प किया। समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी गौरांगशरण देवाचार्य (गुजरात) तथा दिल्ली के महापौर श्री पृथ्वीराज साहनी ने संस्कृति सम्मान वैदिक विद्वान् प्रो० (डॉ०) सुन्दरलाल कथूरिया, सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० देवेन्द्र आर्य, डॉ० शरदनारायण खरे, महंत सुनीलदास, डॉ० अकेला भाई, श्री प्राण शर्मा, श्री दिनेश शर्मा, श्री ओम प्रकाश मिश्र तथा श्री सत्येन्द्र पाण्डेय को प्रदान किया।

मीरा स्मृति पुरस्कार

प्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने कवि पंकज राग को, भोपाल में मीरा पुरस्कार देते हुए कहा कि पूरे विश्व में पूँजीवादी ताकतें उभर कर सामने आई हैं और वह आज अखण्ड राज्य कर रही हैं। हमारा देश इसी तरह बढ़ रहा है। ऐसे में जनता को यह चुनना है कि वह किसका पक्ष ले। उन्होंने कहा कि समझदारी विकसित करने वाले तत्त्व अलग-अलग खेमों में बट चुके हैं। जिन्दगी ज्यादा जटिल है और पक्ष इतनी आसानी से नहीं लिया जाता। इसलिए इतिहास के सरलीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा न देकर जनता की दृष्टि से इतिहास का पुनर्वलोकन करना चाहिए।

प्रो० नामवर सिंह जी ने कहा कि पुरस्कार उपलब्धि पर दिये जाते हैं, लेकिन पंकज राग को यह पुरस्कार सम्भावनाओं का पुरस्कार है। श्री नामवर सिंह ने पुरस्कार राशि रु० 25000 एवं शॉल, श्रीफल देकर श्री पंकज राग को सम्मानित किया।

'वर्तमान साहित्य कहानी और कविता पुरस्कार' समारोह सम्पन्न

'वर्तमान साहित्य' पत्रिका द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित 'कमलेश्वर कहानी पुरस्कार' और 'मलखान सिंह सिसौदिया कविता पुरस्कार' के कार्यक्रम में चयनित कहानीकार डॉ० नताशा अरोड़ा को उनकी कहानी 'प्रश्न' के लिये तथा 'इसी काया में मोक्ष' काव्य संग्रह के रचनाकार डॉ० दिनेश कुशवाहा को अलीगढ़ में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में सम्मानित और पुरस्कृत किया गया।

अध्यक्षता करते हुए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रो० शहरयार ने आज के साहित्य परिदृश्य में लेखकों के सामाजिक चिन्तन और सरोकारों को रेखांकित करते हुए कहा कि वही साहित्य जीवित रहता है जिसमें विचार और कला का अनुशासनबद्ध समावेश हो।

आलोक श्रीवास्तव को रूस का अन्तर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान

हिन्दी के जाने-माने कवि आलोक श्रीवास्तव को उनकी पुस्तक 'आमीन' के लिए रूस का अन्तर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान दिए जाने की घोषणा की गई है। रूस के 'भारत मित्र समाज' द्वारा प्रतिवर्ष हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि या लेखक को मास्को में हिन्दी-साहित्य का यह महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान दिया जाता है। सम्मान-समिति ने आलोक श्रीवास्तव के गजल-संग्रह 'आमीन' को अन्तर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान, वर्ष 2008 देने का निर्णय लिया है। आलोक को यह सम्मान जल्द ही मास्को में आयोजित होने वाले एक गरिमापूर्ण कार्यक्रम में दिया जाएगा।

कला समीक्षक मनमोहन सरल सम्मानित

उज्जैन स्थित कलावर्त न्यास द्वारा 15वें राष्ट्रीय कला उत्सव में कला समीक्षक मनमोहन सरल को राष्ट्रीय वर्णपट अलंकरण प्रदान किया गया। विशेष रूप से आयोजित समारोह में अनेक चित्रकार, कलाप्रेमियों और विशिष्ट जन की उपस्थिति में उन्हें, शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र और दस हजार रुपए की राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

श्री रघुवीर सिंह 'अरविंद' को 'साहित्यश्री'

अलीगढ़ के डॉ० राकेश गुप्त द्वारा अपनी स्व० पत्नी श्रीमती तारावलि गुप्त की स्मृति में दिया जाने वाला 'साहित्यश्री' सम्मान इस वर्ष एक भव्य समारोह में वरिष्ठ कवि श्री रघुवीर सिंह 'अरविंद' को दिया गया। सम्मान समारोह की अध्यक्षता केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम के प्राच्य विद्या संकाय के डीन प्रो० वी०पी० मुहम्मद कुंज मेत्तर ने की। ग्रन्थायन के व्यवस्थापक अभयकुमार गुप्त ने श्री अरविंद को 5100 रुपये की सम्मान राशि एवं सरस्वती की प्रतिमा अर्पित की। डॉ० गोपाल बाबू शर्मा ने उन्हें शाल उढ़ाकर सम्मानित किया।

सीताकांत महापात्र को पद्मविभूषण

इस वर्ष पद्म पुरस्कारों के लिए जिन नामों की घोषणा हुई उनमें ओड़िया एवं अंग्रेजी के प्रख्यात कवि-लेखक एवं नेशनल बुक ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष डॉ० सीताकांत महापात्र (साहित्य-शिक्षा) तथा संस्कृतिकर्मी डॉ० कपिला वात्स्यायन (कला और प्रशासन) को पद्म पुरस्कारों की सर्वोच्च कोटि, पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया है। इनके अलावा, प्रो० कृष्ण कुमार (साहित्य-शिक्षा) तथा श्री महिम बरा (साहित्य-शिक्षा) का पद्मश्री सम्मान के लिए चयन हुआ है।

डॉ० विनय कुमार पाठक सम्मानित

विगत दिनों राज्योत्सव के समापन अवसर पर छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा रायपुर में प्रख्यात समीक्षक एवं भाषाविद् डॉ० विनय कुमार पाठक को साहित्य के सर्वोच्च 'पण्डित सुन्दरलाल शर्मा सम्मान' से अलंकृत किया गया, जिसमें राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री अरुण जेटली के मुख्य आतिथ्य, मुख्यमन्त्री डॉ० रमन सिंह की अध्यक्षता एवं विधानसभा अध्यक्ष श्री धर्मलाल कौशिक के विशेष आतिथ्य में एक लाख रुपए के डिमाण्ड ड्राफ्ट के साथ सम्मान पत्रक, स्मृति-चिह्न, श्रीफल, पुष्प-गुच्छ प्रदान किए गए।

इसी क्रम में विगत दिनों बिलासपुर में छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्यकार परिषद् एवं बख्शी सृजनपीठ के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित वार्षिक साहित्यकार सम्मेलन में डॉ० विनय कुमार पाठक को 'स्व० उमेश शर्मा साहित्यिक सम्मान' देने की घोषणा की गई। इसमें 11 हजार राशि के साथ स्मृति-चिह्न, शॉल, श्रीफल भेंट किया जाता है।

भारतीय मूल के रोहिंटन मिस्त्री मैन बुकर के लिए नामांकित

भारतीय मूल के उपन्यासकार रोहिंटन मिस्त्री को लेखन के प्रतिष्ठित 'मैन बुकर पुरस्कार' के लिए नामांकित किया गया है। उनके साथ इस दौड़ में 12 अन्य लेखक भी शामिल हैं। इन उम्मीदवारों में से 96,070 डॉलर (करीब 42 लाख रुपये) राशि वाले इस पुरस्कार के विजेता का चयन होगा। कनाडा में रहने वाले 59 वर्षीय मिस्त्री का जन्म मुम्बई में हुआ था। बॉम्बे यूनिवर्सिटी से स्नातक करने वाले मिस्त्री तीन प्रसिद्ध उपन्यासों 'सच ए लांग जर्नी' (1991), 'ए फाइन बैलेंस' (1996) और 'फैमिली मैटर्स' (2002) से चर्चा में आए। 'सच ए लांग जर्नी' को राष्ट्रमण्डल लेखक पुरस्कार और गवर्नर जनरल पुरस्कार मिल चुका है। 'ए फाइन बैलेंस' को भी राष्ट्रमण्डल लेखक पुरस्कार और लॉस एंजिलिस टाइम्स पुस्तक पुरस्कार दिया गया था। 'फैमिली मैटर्स' के लिए वह 2002 में भी बुकर पुरस्कार में नामांकित हो चुके हैं। नामांकनों का 29 मार्च को सिडनी में ऐलान किया गया।

साहित्य पुरस्कारों की घोषणा

विगत दिनों लखनऊ के राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान ने डॉ० विक्रम सिंह को 'महावीरप्रसाद दिवेदी पुरस्कार', डॉ० रविशंकर

पाण्डेय को दीर्घकालिक सेवा हेतु 'सुमित्रानन्दन पंत पुरस्कार', श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी को 'अमृतलाल नागर पुरस्कार', श्री घनानंद पाण्डेय को 'जयशंकर प्रसाद पुरस्कार', श्री कृष्णकान्त रघुवंशी को 'डॉ० विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार', श्री सुरेश उजाला को 'डॉ० शिवमंगल सिंह पुरस्कार', मिर्जा शरीफ हुसैन को 'गालिब पुरस्कार' तथा श्री सैयद अब्बास रजा को 'फिराक गोरखपुरी पुरस्कार' देने की घोषणा की गई है।

कौस्तुभ पुरस्कार वितरित

गीता जयन्ती के अवसर पर भारतीय विद्या भवन में आयोजित एक समारोह में प्रो० सत्यव्रत शास्त्री को कौस्तुभ पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया। संस्कृत में मौलिक लेखन के प्रोत्साहन के लिए पहली बार आरम्भ किए गए पुरस्कारों के अन्तर्गत डॉ० विंध्येश्वर पाण्डे, डॉ०प्रभाकर जोशी और डॉ० कैलाशनाथ द्विवेदी को नकद राशि, श्रीफल एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

प्रो० शतपथी को 'डालमिया संस्कृत सम्मान'

प्रो० हरे कृष्ण शतपथी को उनके 'संस्कृत महाकाव्यम भारतायनम्' पर रामकृष्ण जयदयाल डालमिया श्रीवाणी अलंकरण देने का निर्णय किया गया। प्रो० रामकरण शर्मा की अध्यक्षता में निर्णायक मण्डल ने प्रो० शतपथी का नाम चयनित किया। श्रीवाणी अलंकरण से सम्मानित विद्वान् को दो लाख रुपए, प्रशस्ति-पत्र, श्रीवाणी की प्रतिमा, रजत श्रीफल दिया जाएगा। जयदयाल डालमिया श्रीवाणी अलंकरण 2010 डॉ० धनुर्धर को उनकी पुस्तक 'वाग्यार्थ-विवेचनम्' पर दिया जाएगा।

श्रीमती मृदुला बिहारी को राधाकृष्ण पुरस्कार

राँची के जैन मन्दिर हॉल में दैनिक 'राँची एक्सप्रेस' की ओर से 2009 का 30वाँ 'राधाकृष्ण पुरस्कार' साहित्यकार श्रीमती मृदुला बिहारी को उनकी कृतियों एवं साहित्य के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया।

अजित वडनेरकर को 'कृति पाण्डुलिपि सम्मान'

विगत दिनों दैनिक भास्कर में कार्यरत श्री अजित वडनेरकर को राजकमल प्रकाशन कृति सम्मान (हिन्दी की शब्द सम्पदा-विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार) दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में उनकी पाण्डुलिपि 'शब्दों का सफर' भाग दो के लिए दिया गया। पुरस्कार-स्वरूप उन्हें एक लाख रुपये की राशि, पंचधातु का अलंकरण और प्रशस्ति-पत्र दिया गया। यह पुरस्कार उन्हें प्रसिद्ध आलोचक श्री नामवर सिंह ने दिया।

डॉ० संजीव शंकर को 'देवीशंकर अवस्थी' सम्मान

समकालीन हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में मिलने वाला 'देवीशंकर अवस्थी सम्मान' इस बार दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ० संजीव कुमार को उनकी पुस्तक 'जैनेन्द्र और अज्ञेय' के लिए दिया जाएगा।

'ललमुनिया की दुनिया' को प्रथम 'सीता पुरस्कार'

विगत दिनों नई दिल्ली के तीन मूर्ति भवन में भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह द्वारा वरिष्ठ रचनाकार श्री दिनेश कुमार शुक्ल की रचना 'ललमुनिया की दुनिया' को 'सीता पुरस्कार' दिया गया। इस अवसर पर श्री नामवर सिंह, श्री अशोक वाजपेयी ने अपने विचार प्रकट किए। पुरस्कार के रूप में एक प्रशस्ति-पत्र और एक लाख रुपये की राशि भेंट की गई।

पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह सम्पन्न

राजस्थान की सुप्रसिद्ध साहित्यिक, सामाजिक तथा शैक्षिणिक संस्था साहित्य-मण्डल, श्रीनाथद्वारा के तत्त्वावधान में प्रभुश्री श्रीनाथजी के पाटोत्सव के अवसर पर गत 23-24-25 फरवरी 2011 को आयोजित 'पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह' के अवसर पर हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों को 'हिन्दी भाषा भूषण' से विभूषित किया गया। इसमें प्रमुख रूप से वाराणसी के डॉ० रामकेवल शर्मा 'मुनिजी', हैदराबाद के श्री कन्हैयालाल शर्मा, इंदौर के डॉ० सतीश दुबे, जयपुर की श्रीमती अपर्णा चतुर्वेदी 'प्रीता', भोपाल की श्रीमती प्रेमकुमारी कटियार, श्रीनाथद्वारा के श्री यशवन्त कोठारी आदि विद्वान उल्लेखनीय हैं। इसी क्रम में 'सम्पादक शिरोमणि' उपाधि से तुमुल तूफान के डॉ० तुमुल विजय शास्त्री, राष्ट्र किंकर के डॉ० विनोद बब्बर, गगनांचल के श्री अजय कुमार शुक्ल, कोटा क्रानिकल के श्री अनिल सुदर्शन आदि सम्पादकों को सम्मानित किया गया।

इसके पश्चात् 'ब्रजभाषा विभूषण' से अनेक विद्वज्जनों को सम्मानित किया गया।

समारोह के अन्त में 'शुभ तारिका' की सम्पादक विदुषी साहित्यकार श्रीमती उर्मि कृष्ण, अम्बाला को 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान-2011' तथा आचार्य श्री रामरंग, दिल्ली को 'श्री मोतीलाल राठी सम्मान-2011' से पुरस्कृत तथा अभिनन्दित कर 11-11 हजार की राशि सम्मानपूर्वक भेंट की गयी। तत्पश्चात् 'हरिसिंगार' (त्रैमासिक) के अनुगुञ्जनाङ्क का लोकार्पण हुआ।

डॉ० जयंत विष्णु नार्लीकर सम्मानित

विगत दिनों डॉ० जयंत विष्णु नार्लीकर को वर्ष 2010 के श्री नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान से अलंकृत किया गया। डॉ० नार्लीकर ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक शोध कार्य के साथ-साथ विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर हिन्दी में उल्लेखनीय लेखन कार्य भी किया है। डॉ० नार्लीकर को सम्मान के रूप में 31,000 रुपये की राशि, शॉल, श्रीफल, स्मृति चिह्न तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी०एम० धर्माधिकारी ने सम्मानित किया। इसी अवसर पर न्यायमूर्ति धर्माधिकारी ने मध्य प्रदेश की प्रख्यात हिन्दी कथाकार श्रीमती ज्योत्स्ना मिलन को श्रेष्ठ कथा लेखन के लिए वर्ष 2010 के श्री शैलेश मटियानी स्मृति चित्रा कुमार तथा पुरस्कार के बतौर 11,000 रुपये की राशि, शॉल, श्रीफल, स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

पाठकों के पत्र

आपके द्वारा की जाने वाली हिन्दी सेवा और सारस्वत साधना के लिए हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

आपके द्वारा ऐसे ही निरन्तर हिन्दी की सेवा होती रहे ऐसी आशा करता हूँ। पत्रिका के उत्तरोत्तर उत्कर्ष के लिए हार्दिक मंगल कामना।

—प्रो० डॉ० यशवंतकर एस०एल०
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, गढी

जनवरी-फरवरी अंक प्राप्त हुआ। अलीम मसरूर के मशहूर उपन्यास 'बहुत देर कर दी' का एक अंश आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की प्रशंसात्मक टिप्पणी के साथ पढ़ने का सुयोग हुआ। निश्चित रूप से यह बेहद पठनीय और श्रेष्ठ उपन्यास है। इसी तरह अन्यान्य मूल्यवान किताबों के बारे में पत्रिका जो जानकारी दे रही है वह निरा विज्ञापन नहीं है। इसमें साहित्यिक समाचारों का जो विपुल संग्रह दिखायी देता है उसके नाते भी पत्रिका महत्त्वपूर्ण लगती है।

—केशव शरण, वाराणसी

बारहवें वर्ष में प्रवेश पर पत्रिका परिवार को बधाई। संस्कृत एवं हिन्दी के तलस्पर्शी विद्वान् प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने अपने निबन्ध 'अ-संस्कृतज्ञ इतिहासकार नहीं हो सकता' में संस्कृत के बाणभट्ट प्रभृति साहित्यकारों द्वारा विरचित प्रशस्ति महाकाव्यों की ऐतिहासिक उपादेयता पर ध्यान आकृष्ट करके आधुनिक इतिहासकारों को अपने अनुसंधान कार्यों एवं इतिहास लेखन हेतु एक नयी दिशा प्रदान की है। प्रो० मिश्र एवं अलीम मसरूर की सद्य:प्रकाशित पुस्तकों तथा अन्नपूर्णानन्द रचनावली के परिचयात्मक विवरण ध्यानाकर्षक हैं। अन्य स्तम्भ भी पूर्ववत् जानकारी परक हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

—डॉ० पवनकुमार शास्त्री, वाराणसी

आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य : समीक्षा/विवेचना

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद

" बहुत से समीक्षकों ने गीत को आधुनिक साहित्य से अलग कर दिया। आधुनिक काव्य के स्वरूप का मूल्यांकन करते समय अधिकांश लोगों ने गीत की चर्चा ही नहीं की। मैं इस प्रवृत्ति को उचित नहीं मानता हूँ। गीत का समुचित ढंग से अध्ययन किया जाना चाहिए। इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने आधुनिक काल के महत्त्वपूर्ण गीतकारों का विवेचन किया है। **—विश्वनाथ प्रसाद**

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 354

सजिल्द : 978-81-7124-777-6 • रु० 400.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

नवगीत

नवगीत का रूप

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक नयी सामाजिक चेतना, राजनीतिक अवधारणा और सांस्कृतिक बोध का जन्म हुआ। समाज का हर वर्ग अपना उत्थान चाहने लगा था। दलित-शोषित वर्ग के मन में अपने अधिकार की बात उठी। समानता का भाव सबके मन में पैदा हुआ। देशी राज्यों का विलय भारतीय गणतंत्र में हुआ। जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ। दलितों को आरक्षण मिला। नयी-नयी शिक्षा संस्थाएँ स्थापित हुईं। भारतीय जन जीवन में एक नयी गति का संचार हुआ। नारी को फिर से पुरुषों के समान प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। भारतीय समाज और राजनीति के इस बदलाव ने हमारी सांस्कृतिक चेतना को भी प्रभावित किया। साहित्य, संगीत, चित्रकला, स्थापत्य आदि सभी क्षेत्रों में एक नयी चेतना का उन्मेष हुआ। नयेपन के साथ हम अपनी संस्कृति के मूल रूप को भी पहचानने का प्रयास करने लगे। ऐसे में ही हिन्दी कविता में प्रयोगवाद के बाद नयी कविता का जन्म हुआ। गीत में नवगीत की शुरुआत हुई। नयी कविता के केन्द्र में मध्यवर्ग की चेतना थी और नवगीत के केन्द्र में सामान्य 'लोक' था। इसीलिए नयी कविता के आरम्भ में मध्यवर्ग की निराशा, टूटन और विवशता भी झलक जाती है। बाद में नयी कविता कई दिशाओं में गई। नवगीत में लोक-चेतना के साथ मध्यवर्गीय मनोदशा की भी सक्रिय भूमिका थी। संथाल, भोजपुर, मालवा और बाद में मिथिला आदि की आंचलिक मिठास भी नवगीत में स्थापित हुई। लोक का परिवेश, लोक का सौन्दर्यबोध, लोकभाषा की कोमलता, लोक गीतों की मिठास आदि ने नवगीत को एक नयी पहचान दी। इसी के साथ मध्यवर्ग की मनोदशा ने भी नवगीत को प्रभावित किया। आरम्भ के नवगीतकारों के दो वर्ग स्पष्टत: अलग-अलग दिखाई देते हैं। लेकिन नयी कविता में प्रतिबिम्बित मध्यवर्गीय मनोदशा अधिक सघन है। नवगीत में उसका अतिरेक नहीं है।

नवगीत का जन्म किसी आन्दोलन के रूप में नहीं हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जीवन के हर क्षेत्र में स्वाभाविक बदलाव आया तो भावुकता और कल्पना के अतिरेक वाले गीत भी स्वाभाविक रूप से बदल गये। यह बदलाव किसी आन्दोलन के रूप में नहीं हुआ। कुछ गीतकारों में आरम्भ से ही एकदम नयापन था, जैसे ठाकुर प्रसाद सिंह। कुछ गीतकारों में नयी और पुरानी दोनों प्रवृत्तियाँ एक साथ रहीं, जैसे वीरेन्द्र मिश्र। डॉ. शम्भुनाथ सिंह में यह बदलाव क्रमश: आया। उनके आरम्भि गीतों में भावुकता और कल्पनाशीलता है। फिर जनोन्मुखी प्रवृत्ति, एकाकीपन और अस्तित्ववादी चेतना से गुजरते हुए वे नवगीत की तरफ आये। अन्त में प्रकृति की ओर लौटने की भावना उनके गीतों में दिखाई देती है। वे विकसनशील गीतकार हैं।

'नवगीत' शब्द का प्रयोग जाने-अनजाने राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने 'गीतांगिनी' की भूमिका में सन् 1958 में किया है। उनके अनुसार प्रगीत का पूरक बनकर नवगीत जन्म ले रहा था। राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने 'नवगीत' शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन वे नवगीत को पहचान नहीं पाये हैं। उन्होंने नवगीत के पाँच तत्व गिनाये हैं—जीवन दर्शन, आत्मनिष्ठा, व्यक्तित्वबोध, प्रीतितत्व और परिसंचय। जिसे आज नवगीत कहा जाता है, वह इन प्रवृत्तियों से अलग है। नवगीत को ठीक से न समझ पाने के कारण ही राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने सुमित्रानन्दन पन्त, दिनकर, अज्ञेय, जानकी बल्लभ शास्त्री, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, विद्यावती कोकिल, रमा सिंह, बच्चन, मुकुट बिहारी सरोज, राबिन शॉ पुष्प आदि को भी नवगीतकार मान लिया है। राजेन्द्र प्रसाद सिंह 'नवगीत' शब्द का प्रयोग करते हुए भी 'नवगीत' की पहचान नहीं कायम कर पाये हैं। अज्ञेय ने भी सप्तक में 'नयी कविता' का उल्लेख किया है, किन्तु वे नयी कविता की पहचान स्थिर नहीं कर पाये। उनकी कविताएँ भी नयी कविता के स्वरूप से भिन्न हैं। यह स्वाभाविक भी है। एकदम आरम्भ में ही किसी प्रवृत्ति अथवा विधा के लक्षण निर्धारित नहीं किये जा सकते हैं।

'गीत' और 'नवगीत' के विमर्श में महत्त्वपूर्ण भूमिका 'पाँच जोड़ बाँसुरी' की है। चन्द्रदेव सिंह द्वारा सम्पादित इस संकलन का प्रकाशन सन् 1969 में हुआ था। संपादक ने इस संकलन के नामकरण में ही ठाकुर प्रसाद सिंह को महत्त्व प्रदान किया है। 'बंशी और मादल' के प्रथम गीत की पहली ही पंक्ति है—'पाँच जोड़ बाँसुरी'। भूमिका में सम्पादक ने लिखा है कि इस संकलन का लक्ष्य पाँच पीढ़ियों का गीत लेखा उपस्थित करना है। निराला, बच्चन, ठाकुर प्रसाद सिंह, केदारनाथ सिंह और ओम प्रभाकर इस पाँच पीढ़ी के प्रतिनिधि गीतकार हैं। निराला के गीत छायावाद की कल्पना बहुलता से अलग हैं। बच्चन ने केवल भाषा की ही दृष्टि से गीत को जीवन के करीब लाने का प्रयास नहीं किया, बल्कि टेक, छन्द और अनुभूति की दृष्टि से भी गीतों को एक नयी दिशा की ओर उन्मुख किया। सम्पादक ने अज्ञेय को भी बच्चन की ही श्रेणी में रख लिया है। बच्चन के निजी हर्ष-विषाद को व्यक्त करने वाले गीत, बाद में लोक धुन और लोक चेतना की ओर मुड़े। अज्ञेय के गीतों में आरम्भ से ही लोक के भाव और लोक की धुन का अनुवर्तन करने की चेष्टा है। लेकिन ठाकुर प्रसाद सिंह के 'वंशी और मादल' में संथाल जीवन के पिछड़ेपन के साथ उसके उल्लास की जैसी अभिव्यक्ति की गई है, वह हिन्दी की गीत-यात्रा में उल्लेखनीय है। गीतों की टेक, अनुगूँज, नाद-ध्वनि, बिम्बों की योजना और प्रतीकात्मक संकेत इन गीतों को विशिष्ट बना देते हैं। नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, रामदरश मिश्र और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने लोक चेतना और लोकधुनों को लेकर गीतों की रचना की है, लेकिन ठाकुर प्रसाद सिंह विशिष्ट हैं।

'पाँच जोर बाँसुरी' में पहले छायावादी चेतना से प्रभावित तीन कवियों के गीत रखे गये हैं। दूसरे चरण में बच्चन से लेकर गिरजा कुमार माथुर तक नौ छायावादोत्तर गीतकार हैं। शम्भुनाथ सिंह को सम्पादक ने बच्चन, अज्ञेय और गिरजा कुमार माथुर के साथ रखा है। तीसरे चरण में ठाकुर प्रसाद सिंह से लेकर वीरेन्द्र मिश्र तक आठ रचनाकार हैं। चौथे चरण में केदारनाथ सिंह से लेकर उमाकान्त मालवीय तक चार गीतकार हैं। पाँचवें चरण में ओम प्रभाकर से लेकर नरेश सक्सेना तक आठ गीतकार हैं। बाद में पाँच विचारकों के पाँच निबन्ध भी हैं। ....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

बाबू गुलाबराय के विविध निबन्ध

सम्पादक : विनोद शंकर गुप्त

''इस पुस्तक में इक्कीस निबन्ध संगृहीत हैं। ये सभी यत्र-तत्र प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं, परन्तु किसी पुस्तक में इनका संग्रहण नहीं हो सका है। प्रकाशन का क्रम इन शीर्षकों के अन्तर्गत है—वैयक्तिक, संस्मरण, सांस्कृतिक-साहित्यिक, सामाजिक-राजनैतिक तथा व्यंग्य। इस संग्रह में भारतीय दर्शनों की रूपरेखा जैसे विशद, गम्भीर और सुविस्तृत लेख भी हैं।''

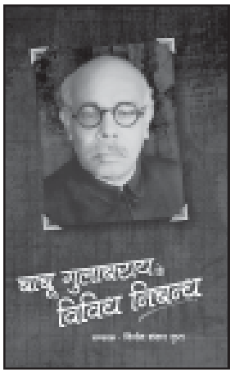

आकार
डिमाई

सजिल्द : 978-81-7124-767-7 • रु० 150.00
अजिल्द : 978-81-7124-768-4 • रु० 90.00

(*पुस्तक के एक अध्याय का अंश*)

खुशामद की सप्त सूत्री योजना

देवी लक्ष्मी कुछ लोगों को भाग्य से प्राप्त होती हैं और कुछ को विद्या और पौरुष से। जिन लोगों को छप्पर फाड़कर लक्ष्मीजी प्राप्त होती हैं वे तो साक्षात् लक्ष्मी-वाहन ही होते हैं। न मानिए तो अंग्रेजी तक का प्रमाण ले लीजिए— Fortune favours fools हमारे अनुप्रास प्रिय मित्र तो इसे अवश्य वेदवाक्य मानेंगे किन्तु उन लोगों में से जो विद्या और पौरुष से लक्ष्मी प्राप्त करते हैं और 'दैवेन देयम्' ऐसा न कहकर कापुरुष होने से बचते हैं, ऐसे उद्योगी पुरुष सिंहों में खुशामदी लोग अग्रगण्य हैं।

यद्यपि रिश्वत और खुशामद एक ही श्रेणी में रखी जाती हैं तथापि इन दोनों में जमीन-आसमान का अन्तर है। रिश्वत में अपने आराध्य को अर्थ-लाभ के द्वितीय श्रेणी के प्रलोभन से प्रसन्नता किया जाता है और फिर पहले लक्ष्मी को देकर लक्ष्मी को प्राप्त करने में कोई तुक भी नहीं। खुशामद वह सुलभ साधन है जिसमें हर्रे फिटकरी कुछ नहीं लगता रंग चोखा ही आता है और आराध्य देव धन-लोलुपता के दूषित प्रलोभनों से बचा रहकर यश जैसे भव्य स्वार्थ से प्रेरित दिखाई देते हैं। काव्य की प्रेरक शक्तियों में यश का स्थान पहले आता है, अर्थकृते का स्थान दूसरा होता है। रिश्वत देने वाले की अपने उपास्य के साथ चार आँखें मुश्किल से ही होती हैं। खुशामदी को अपने इष्टदेव का सान्निध्य-सुख प्राप्त रहता है और वह उसकी मुखमुद्रा और आकारेङ्गित से अनुमान लगा लेता है कि उसका तीर निशाने पर लग रहा या नहीं। खुशामद में चारों ओर प्रसन्नता का ही वातावरण रहता है किन्तु होना चाहिए कुशल खुशामदी।

सच्चा खुशामदी कुशल कलाकार होता है। वह मनोविज्ञान का पण्डित होता है। वह जानता है कि Fame is the last infirmity of noble minds. वह इस अन्तिम कमजोरी को पहली कमजोरी मान उससे लाभ उठाता है। यश का प्रलोभन सबसे बड़ा प्रलोभन है। भगवान कृष्ण का गीता-ज्ञान जब निष्फल रहा तब उनको भी अर्जुन से कहना पड़ा कि 'यशोलभस्य'। खुशामदी अपने आराध्य को आत्मख्याति की लालसा के आधार पर अपना व्यापार चलाता है किन्तु वह अपने लक्ष्य को यह नहीं मालूम होने देता कि आत्मख्याति की कमजोरी का शिकार है। एक कुशल खुशामदी एक अफसर के पास यह कहकर पहुँचा कि और जगह तो खुशामद से भी काम चल जाता है, यहाँ खुशामद भी नहीं चलती। तीर निशाने पर लग गया। रिश्वत के देने वाले भी अपने लक्ष्य के आत्मभाव और गौरव-सम्मान को बनाये रखना चाहते हैं किन्तु लेने वाले की आत्मा पर एक कलुष-सा छाया रहता है। खुशामद की कला का यह पहले स्वार्थ सूत्र है कि खुशामद के आलम्बन को यह न मालूम होने देना चाहिए कि खुशामद की जा रही है। अन्य स्वार्थ इस प्रकार हैं।

1. सिद्धान्तानुमोदनम्

खुशामदी की रुचि और मानसिक झुकाव के अनुकूल बात कहनी चाहिए। खुशामदी अपने आलम्बन की प्रतिध्वनि करे किन्तु कुछ बदली हुई आवाज में जिससे उसके अपने सिद्धान्तों की पुष्टि के लिए नई युक्तियाँ मिलें। खुशामदी हाँजू हाँजू धर्म निभाहे किन्तु बुद्धि कौशल के साथ कभी-कभी अपना स्वतन्त्र मत प्रकट करने के दो-एक गौण बातों में हेर-फेर भी कर दे।

2. तत्प्रियजनशंसनम्

खुशामदी अपने आलम्बन की प्रशंसा न कर उसके प्रियजनों, पोषितों और संरक्षित जनों की प्रशंसा करे। कभी-कभी उसके द्वारा या उसके प्रियजनों द्वारा खरीदी हुई वस्तुओं की तारीफ कर उसकी रुचि और व्यापार कुशलता की सराहना कर दे।

3. बद व्यसनानुशीलनम्

खुशामदी अपने आलम्बन की रुचि के व्यसनों में भाग ही न ले वरन् उत्साह भी दिखावे। अगर उसके बड़े साहब को टिकट जमा करने का शौक है तो दूर देशों के नायाब टिकटों का संग्रह करके दे। यदि चित्र या मूर्ति-संग्रह में शौक है तो उनके संग्रह में सहायता करे नहीं तो उनकी पांडित्यपूर्ण चर्चा करे। यदि उसके अन्नदाता को होमियोपैथी की दवा देने का शौक है तो अच्छे मरीजों को उनके पास लाये नहीं तो घर वालों को ही मरीज बनाये रखे। अगर साहब को पढ़ने-लिखने का या हस्तलिखित ग्रन्थों का व्यसन हो और उस कार्य में साधक की गति भी न हो तो काव्यशास्त्र के विनोद की सराहना कर उनकी तारीफ करता रहे।

4. हीनता स्वीकृति

आदमी स्वयं अपनी प्रशंसा सुनते-सुनते ऊब जाता है। इसलिए कुछ बातों में खुशामदी लोग अपनी हीनता स्वीकार कर लेते हैं जिससे उनके आराध्य का मान बढ़े। उनको संस्कृतज्ञ प्रमाणित करने के लिए किसी साधारण से श्लोक का अर्थ पूछ लिया या कोई घरेलू समस्या सामने रख दी अथवा अपनी परेशानी और मूर्खता का उद्घाटन कर आराध्य देव से परामर्श लेने का अभिनय कर दे और उनकी सलाह की कुछ दिनों बाद तारीफ कर दी जाये।

5. परनिन्दा कारणम्

अफसर हाकिम की सीधी प्रशंसा न कर उसकी समान स्थिति के लोगों की विशेषकर जिनसे उनका द्वेष या ईर्ष्या भाव हो, बुराई करे जिससे कि आराध्य देव का आत्मभाव बढ़े। अगर अफसर धर्मात्मा है तो दूसरे अफसरों के खान-पान के भ्रष्टाचार की निन्दा करे और यदि अफसर नवीनतावादी है तो दूसरे अफसरों के दकियानूसपन या बाबा वाक्यं प्रमाण की मूर्खता पर व्यंग्य करे।

6. आराध्यहीनता विवर्जनम्

आराध्य की यदि तारीफ नहीं तो आराध्य की हीनता का किसी प्रकार संकेत भी न करे—यह नकारात्मक गुण अनिवार्य है। यदि आराध्य के यहाँ भोजन करने का अवसर मिले तो यदि कोई चीज खराब भी बनी हो तो भी उसे बार-बार माँग कर उसकी प्रशंसा व्यक्त करे। खाने के बाद यदि थोड़ा साबुन माँगते हुए भोजन में घी के अधिक की व्यञ्जना कर दे तो और भी अच्छा है। यदि कोई आराध्य की कहीं बुराई करे तो उसे हरि गुरु निन्दा का-सा महत्त्व दे। लड़ भी पड़े तो कुछ हर्ज नहीं। बशर्ते की आराध्य को मालूम हो जावे। आराध्य का शरीर मोटा हो गया हो तो मुटाई का दोष न देकर कपड़े की सिकुड़नशीलता या दर्जी की अदूरदर्शिता को दोष दे।....

प्राप्ति स्थान
विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

संगोष्ठी/लोकार्पण

'हिन्दी माध्यम से रोजगारोन्मुख शिक्षा'

वर्धा में महात्मा गाँधी द्वारा सन् 1936 में स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के 21वें अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन के अन्तर्गत अध्यक्षीय उद्‌बोधन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष गाँधीवादी विचारक न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी ने कहा कि हमें आज तकनीक के साथ-साथ जीवन से जुड़कर कार्य करने की जरूरत है।

सम्मेलन के अन्तर्गत समिति के प्रधानमन्त्री प्रा० अनन्तराम त्रिपाठी, सहायक मन्त्री कैलाशचन्द्र पन्त, प्रचार मन्त्री डॉ० हेमचन्द्र वैद्य, लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष व हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के अध्यक्ष प्रो० डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित, वरिष्ठ साहित्यकार गिरिराज किशोर आदि विद्वानों ने अपने वक्तव्य में हिन्दी माध्यम से नयी पीढ़ी को रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान करने की अनिवार्यता सिद्ध की। इसके साथ ही वक्ताओं ने विभिन्न माध्यमों अनुवाद, पर्यवेक्षण, रूपान्तरण, आशु अनुवाद, डबिंग, समाचार लेखन, सम्पादन आदि विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी-प्रसार के अनुकूल प्रशिक्षण एवं तत्सम्बन्धी पुस्तकों के लेखन की आवश्यकता भी रेखांकित की।

काशी में रविदास जयंती

संत शिरोमणि रैदास की जयंती के अवसर पर नगर में कई संगोष्ठियाँ विशाल पैमाने पर आयोजित की गईं। 17-02-11 को जयंती की पूर्व संध्या पर जगजीवनराम ट्रस्ट द्वारा लोकसभा अध्यक्ष मीराकुमार के मुख्य आतिथ्य में राजघाट रविदास मन्दिर में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। मुख्य अतिथि मीरा कुमार (लोकसभा अध्यक्ष) ने कहा मुझे रविदास के भजनों का परिचय पूज्य बाबू जगजीवनराम के माध्यम से हुआ। रविदास जी की बानी में एक ऐसी शीतल बयार बहती है जो छोटे-बड़े के भेद को अपनी शीतलता से मिटा देती है। संस्कृति और धर्म की नगरी काशी द्वारा रैदास की बानियों का सन्देश दूर तलक जाता है, जहाँ मानवीय संवेदनाओं का पूर्ण विकास दिखायी पड़ता है। प्रो० नवान समतेन कुलपति तिब्बती वि०वि० ने कहा कि धर्म की भूमिका मनुष्यता के सृजन में होती है। रैदास की बानियाँ काशी से यही सन्देश प्रदान करती हैं। प्रो० पंजाब सिंह, प्रो० के०पी० सिंह, प्रो० चौधरी ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन संयोजन डाइरेक्टर रविदास पीठ डॉ० प्रज्ञा पारमिता ने किया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में दलित चेतना को सन्दर्भित करते हुए डॉ० उदयप्रताप सिंह ने कहा—हाथ से काम और जिह्वा से राम जप कर ही समरस समाज बन सकता है।

पुण्य-स्मरण : बाबू गुलाब राय

सुप्रसिद्ध साहित्यकार बाबू गुलाब राय की पुण्य-स्मृति में उनकी 123वीं जन्म-जयंती का भव्य आयोजन 'बाबू गुलाब राय स्मृति-संस्थान' द्वारा आगरा स्थित नागरी प्रचारिणी सभा के मानस-भवन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष थे डॉ० परमानन्द पांचाल। बाबू गुलाब राय के साहित्य-अवदान, उनके चिन्तन, दर्शन और वैचारिक-प्रेरणाओं का विश्लेषण करते हुए सुधी वक्ताओं ने 'बाबूजी' के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर श्री भगवती प्रसाद देवपुरा को 'बाबू गुलाब राय सम्मान', पं० हरिप्रसाद शर्मा एवं डॉ० परमानंद पांचाल को 'बाबू धर्मपाल विद्यार्थी सम्मान' और श्री विश्वमोहन तिवारी को 'प्यारेलाल विज्ञान लेखन' सम्मान प्रदान किया गया। इसी क्रम में विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित एवं विनोदशंकर गुप्त द्वारा सम्पादित 'बाबू गुलाब राय के विविध निबन्ध' और 'जीवन पाथेय' का विमोचन और लोकार्पण किया गया। इसके अतिरिक्त डॉ० रामअवतार शर्मा कृत 'हिन्दी पत्रकारिता' तथा डॉ० श्री भगवान शर्मा लिखित 'हिन्दी भाषा का इतिहास' पुस्तकों का विमोचन भी सम्पन्न हुआ।

'समकालीन हिन्दी उपन्यास : विमर्श के नए क्षितिज'

समकालीन हिन्दी उपन्यास लेखन के लिए यह जानना जरूरी है कि हमारे समकालीन प्रश्न क्या हैं? उपन्यास किसके लिए है—आलोचक के लिए अथवा पाठक के लिए। जिस लोकतन्त्र को हम पाना चाहते हैं वह हमें मिला या नहीं, यह यथार्थ समकालीन उपन्यासों में होना चाहिए। यही विमर्श है। उपन्यास में सच्चा विमर्श वही है जिसमें समाज की सम्वेदना को रेखांकित करने की क्षमता है। यह बात वरिष्ठ आलोचक प्रो० विजय बहादुर सिंह ने डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के हिन्दी विभाग द्वारा 'समकालीन हिन्दी उपन्यास : विमर्श के नए क्षितिज' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्‌घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कही। इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रो० सत्यकाम ने कहा कि हिन्दी उपन्यासों में जीवन पर समग्रता से विमर्श हुआ है। वर्तमान दौर की हर समस्या समकालीन उपन्यासों में दर्ज हो रही है। लेकिन विमर्श का दबाव आज इतना बढ़ गया है कि कृतियों का दम घुट रहा है। विशिष्ट अतिथि श्री भारत भारद्वाज ने विमर्श के नए क्षितिज की चर्चा करते हुए बताया कि किस तरह हमारी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं व्यक्तिगत समस्याएँ उपन्यास में विमर्श का विषय हो सकती हैं।

लोकार्पण

कविता की अनिवार्य शर्त है, जन-पक्षधरता। जो कविता जन से सीधे जुड़ती है वही दीर्घकालिक होती है। आज के समय में जब कि आदमी की सम्वेदना मरती जा रही है, कविता ही इस विषम समय में सम्वेदना को बचाये रख सकती है। गणेश प्रसाद 'गम्भीर' की कवितायें सीधे-सीधे जन से जुड़ती हैं।

यह उद्‌गार हिन्दी के प्रख्यात नवगीतकार पं० श्रीकृष्ण तिवारी ने 'गम्भीर' के कविता संग्रह 'हीरे जैसी धार' के लोकार्पण के अवसर पर व्यक्त किये।

कथ्य-शिल्प के तत्त्वावधान में वाराणसी के पराड़कर स्मृति भवन में विगत दिनों आयोजित समारोह में इसी अवसर पर ग़ज़लकार श्री प्रकाश श्रीवास्तव के ग़ज़ल संग्रह 'रोशनी कैद हुई कातिलों की मुट्ठी में' का लोकार्पण करते हुए प्रख्यात समीक्षक डॉ० जीतेन्द्रनाथ मिश्र ने कहा कि प्रकाश की ग़ज़लों में वैविध्य, सहजता और अपना वैशिष्ट्य है। विद्वान् समालोचक डॉ० रामसुधार सिंह व श्री व्योमेश शुक्ल ने भी अपने विचार व्यक्त किये। वरिष्ठ पत्रकार डॉ० अत्रि भारद्वाज ने गोष्ठी का उद्‌घाटन किया।

विज्ञान को हिन्दी ही आम जनता तक पहुँचा सकती है : डॉ० जयंत नार्लीकर

विश्व विख्यात वैज्ञानिक पद्म विभूषण डॉ० जयंत विष्णु नार्लीकर ने कहा कि विज्ञान के क्षेत्र में हाल ही के वर्षों में नए-नए अविष्कार और अनुसंधान हुए हैं उनका लाभ आम आदमी तक पहुँचाने के लिए नई हिन्दी गढ़नी होगी। इस नई हिन्दी में अन्य भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के व्यावहारिक शब्दों को भी शामिल करना आवश्यक है। डॉ० नार्लीकर ने ये विचार विगत दिनों हिन्दी भवन में मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और पं० रविशंकर शुक्ल हिन्दी भवन न्यास द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई आठवीं शरद व्याख्यानमाला के अवसर पर 'ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान देते हुए व्यक्त किए।

डॉ० नार्लीकर ने विज्ञान की ताजा आश्चर्यचकित कर देने वाली उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि बीसवीं सदी जहाँ भौतिक विज्ञान में उपलब्धियों की सदी रही है, वहीं इक्कीसवीं सदी जीव-विज्ञान में क्रान्ति लाएगी।

उन्होंने कहा कि आम लोगों को विज्ञान के बारे में प्रबोधन अपनी भाषा में ठीक ढंग से दिया जा सकता है। यह काम हिन्दी भाषा में निश्चित ही बेहतर ढंग से हो सकता है। आपने सुझाव दिया कि ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित टी०वी० चैनलों पर डब किए गए कार्यक्रमों की बजाय हिन्दी में मूल कार्यक्रम तैयार होना चाहिए। वे इसका सफलतापूर्वक प्रयोग कर चुके हैं।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी०एम० धर्माधिकारी ने कहा कि विज्ञान को लोगों तक पहुँचाने के लिए हिन्दी से अच्छा दूसरा कोई माध्यम नहीं हो सकता।

'मंच अंधेरे में' मराठी में

विगत दिनों प्रसिद्ध हिन्दी नाटककार नरेन्द्र मोहन के नाटक 'मंच अंधेरे में' के मराठी अनुवाद (अनुवादक : डॉ० मंगला वैष्णव) 'अंधारात रंगमंच' का लोकार्पण करते हुए प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री डॉ० विट्ठलराव घुगे ने कहा कि 'मंच अंधेरे में' जैसे नाटक का मराठी में अनुवाद मराठी रंग जगत में एक घटना है। नाटककार नरेन्द्र मोहन ने 'मंच अंधेरे में' के नाट्य लेखन की प्रक्रिया का ज़िक्र करते हुए कहा कि इस नाटक का मराठी में आना उसका पुनर्जन्म ही नहीं है, मराठी रंग-संस्कार के साथ उसका पुन: सृजन भी है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता मराठी के प्रख्यात आलोचक श्री बालकृष्ण कवठेकर ने की।

मौनी बाबा को समर्पित पुस्तक का विमोचन

वाराणसी के श्री दत्तात्रेय प्रसाद अन्नधन आश्रम चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रांगण में काशी में पहली बार पधारे श्री कैलाश आश्रम, महासंस्थानम्, श्री राजेश्वर नगर, बंगलुरू के जगद्‌गुरु श्री जयेन्द्र पुरीजी ने नीता दिलीप की मौनी बाबा जीवन चरित्र पुस्तक का विमोचन किया।

रंगमंच निखारने जुटे कलाविद्

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भारतीय व पाश्चात्य रंगमंच निदेशकों के बीच संवाद स्थापित करने का प्रयास किया गया। इसी बहाने कलाविदों का जमावड़ा हुआ। विमर्श के केन्द्र में 'नाट्यशास्त्र' था। इसके लिए विगत दिनों तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो० डी०पी० सिंह ने महामना पं० मदन मोहन मालवीय की कला, संगीत, रंगमंच एवं अन्य संबद्ध कलाओं को रेखांकित किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र नई दिल्ली के अध्यक्ष चिन्मय आर बारेखान, मुख्य वक्ता लिंकन विश्वविद्यालय यूके के डॉ० श्रीनाथ नायर थे। विशिष्ट अतिथि कालिदास अकादमी उज्जैन के निदेशक प्रो० पी०एन० शास्त्री थे।

पुरुष समाज बर्दाश्त नहीं कर सकता नारी का तेज

गृहस्थ जीवन में भी महिलाओं के लिए एक ऐसा स्थान होना चाहिए जहाँ वह अकेले बैठकर चिन्तन कर सकें। नारी को अर्धांगिनी क्यों कहा जाता है, क्या वह पूर्ण नहीं है। पुरुष समाज महिलाओं का तेज बर्दाश्त नहीं कर सकता। गणेश राय पी०जी० कॉलेज डोभी में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रख्यात साहित्यकार प्रो० नामवर सिंह ने ये सवाल उठाये। उन्होंने कहा कि दुनिया नब्बे के दशक के बाद तेजी से बदली है। आज हर चीज बिकाऊ हो गयी है। बाजारीकरण के इस दौर में महिलाओं पर भी संकट दिखाई दे रहा है। इस क्रम में उन्होंने वचन दिया कि वह नारी पर एक किताब लिखेंगे।

अज्ञेय परम राग के कवि : नामवर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित राधाकृष्ण सभागार में अज्ञेय जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में अज्ञेय पर केन्द्रित संगोष्ठी का उद्‌घाटन प्रख्यात समीक्षक प्रो० नामवर सिंह ने किया और कहा कि भारतीय परम्परा में मनुष्य प्रकृति से गहरे रूप में जुड़ा रहा है। छायावाद के बाद अज्ञेय ने कविता में प्रकृति चित्रण को अत्यधिक महत्त्व दिया है। हिन्दी विभाग की ओर से 'अज्ञेय : प्रकृति एवं प्रासंगिकता' विषयक इस संगोष्ठी में प्रो० नामवर ने कहा कि आधी से अधिक दुनिया की प्रकृति को अज्ञेय ने देखा था।

प्रो० नामवर ने कहा कि अज्ञेय की कविता 'असाध्य वीणा' प्रकृति का निचोड़ है। अज्ञेय शब्द प्रयोग में मितव्यायी हैं, परम राग के कवि हैं तथा चित्रात्मकता के लिए नाद सौन्दर्य को बल देते हैं। अध्यक्षता कला संकाय प्रमुख प्रो० कमलशील ने की।

निराला काव्य में है भाव तरलता

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित राधाकृष्णन सभागार में विगत 8 मार्च को निराला की कविताओं पर विचार का प्रवाह चला। 'निराला की उपस्थिति' विषयक गोष्ठी में मुख्य वक्ता हिन्दी के वरिष्ठ कवि पंकज सिंह ने कहा कि निराला की कविताएँ, वृहत्तर भारतीय समाज की कविताएँ हैं। उन्होंने इस बात को विशेष रूप से रेखांकित किया कि निराला अपने रचना संसार में आशय के साथ-साथ भाषा के संसार को लेकर उपस्थित होते हैं। अध्यक्षता करते हुए प्रो० रामकीर्ति शुक्ल ने कहा कि निराला का काव्य-बोध विविधरंगी है। काव्य भाषा में शैलियों और भाषा का आवर्तन अपने समकालीनों में अलग ढंग का है। स्वागत प्रो० राधेश्याम दुबे, विषय प्रवर्तन व संचालन डॉ० श्रीप्रकाश शुक्ल ने किया।

अज्ञेय जन्मशती का चेन्नई में आयोजन

आधुनिक हिन्दी साहित्य के शिखरपुरुष सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की जन्मशती (1911-2011) सोमवार, 7 मार्च 2011 को चेन्नई स्थित राजेन्द्र बाबू भवन में समारोहपूर्वक मनायी गई। इस साहित्यिक समावेश में प्रमुख अतिथिगण थे वयोवृद्ध लेखक एवं उद्योगपति श्री बालकृष्ण गोयनका, प्रतिष्ठित समाजसेवी एवं बिहार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री शोभाकान्तदास और हिन्दी-तमिल के जाने-माने लेखक डॉ० एन० सुन्दरम्। साहित्यानुशीलन समिति के अध्यक्ष डॉ० इन्दरराज बैद ने उपस्थित साहित्यकारों और हिन्दी-प्रेमियों का स्वागत करते हुए कहा कि अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे जिन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, समालोचना, संस्मरण और पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान देकर हिन्दी का भण्डार भरा है। अज्ञेय-साहित्य का विमर्श प्रस्तुत करने वाले चेन्नई के चार विद्वानों को अंगवस्त्रम् एवं ग्रन्थोपहार प्रदानकर सम्मानित किया गया।

प्रवासी साहित्य को आरक्षण की जरूरत नहीं : तेजेंद्र शर्मा

प्रवासी साहित्य को पाउण्ड में न तौलकर उसकी आलोचना भी होनी चाहिए, ताकि उनका साहित्य और ज्यादा निखर कर सामने आ सके। डी०ए०वी० कॉलेज फॉर गर्ल्ज, यमुनानगर (हरियाणा) और कथा यू०के० (लंदन) के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय (10-12 फरवरी, 2011) अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्‌घाटन सत्र में ब्रिटिश लेबर पार्टी की काउंसलर तथा कहानीकार जकीया जुबैरी ने अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध

कथाकार एवं 'हंस' के सम्पादक राजेन्द्र यादव का कहना था कि प्रवास का दर्द झेलना आज के दौर में मनुष्य की नियति है। यह दर्द कोई विदेश में जाकर झेलता है तो ढेर सारे लोग ऐसे हैं, जिन्हें देश के अन्दर ही यह दंश झेलना पड़ता है। कथा यू०के० (लंदन) के महासचिव और 'कब्र का मुनाफ़ा' जैसी चर्चित कहानी के लेखक सुप्रतिष्ठित कहानीकार तेजेंद्र शर्मा की पीड़ा थी कि विदेश में लिखे गए साहित्य को प्रवासी साहित्य का आरक्षण देकर मुख्य धारा के लेखकों में उन्हें शामिल नहीं किया जाता।

इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० गोपेश्वर सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि प्रवासी साहित्य एक स्थापित साहित्य है जिसे दरकिनार नहीं किया जा सकता। प्रवासी साहित्य के जरिए हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। इस क्रम में आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों में प्राचार्य डॉ० सुषमा आर्य, पत्रकार अजित राय, आबू धाबी के कथाकार कृष्ण बिहारी, बर्मिंघम से डॉ० कृष्ण कुमार, भगवानदास मोरवाल, मनोज श्रीवास्तव, महेन्द्र मिश्र, प्रेम जनमेजय आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। इसी क्रम में चार पुस्तकों—भगवान दास मोरवाल के उपन्यास 'रेत' का उर्दू अनुवाद, लंदन से आई कहानीकार दिव्या माथुर की '2050 और अन्य कहानियाँ', कृष्ण बिहारी के कहानी संग्रह 'स्वेत श्याम रतनार' एवं तेजेंद्र शर्मा के कहानी संग्रह 'कल फिर आना' के पंजाबी अनुवाद का लोकार्पण भी हुआ।

स्त्री-लेखन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

विगत दिनों जे०बी० राव महाविद्यालय धुले में 'इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के महिला लेखन में बदलती नारी प्रतिमा' शीर्षक विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। उद्‌घाटन सत्र की मुख्य अतिथि प्रख्यात रचनाकार डॉ० सूर्यबाला ने प्रथम दशक में आईं प्रख्यात महिला कथाकारों की प्रमुख औपन्यासिक कृतियों की सराहना की। विभागाध्यक्ष डॉ० मृदुला वर्मा ने स्त्री लेखन की उपलब्धियों की चर्चा की।

प्रो० अशोक चक्रधर की षष्टिपूर्ति

वरिष्ठ कवि, लेखक और फिल्मकार प्रो० अशोक चक्रधर की षष्टिपूर्ति पर दिल्ली के इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर में 'जश्ने अशोक' शीर्षक से एक कार्यक्रम का आयोजन डायमण्ड पब्लिकेशंस और वाणी प्रकाशन द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर प्रो० चक्रधर की तीन पुस्तकों 'सब मिलती रहना', 'डाल पर खिली तितली' तथा 'चंपू को अचरज भारी' का लोकार्पण सर्वश्री अजय माकन, मुजीब रिजवी, सुधीश पचौरी, साहित्यकार सर्वश्री रामदरश मिश्र और बाल कवि बैरागी ने किया।

जन्मशती पर दो दिवसीय आयोजन

विगत दिनों नई दिल्ली में हिन्दी के प्रमुख कवि और गद्य शिल्पी शमशेर बहादुर सिंह को उनकी जन्मशती पर स्मरण करने के लिए जन संस्कृति मंच के दो दिवसीय के कार्यक्रम के आरम्भ में शमशेर, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल और फैज की रचनाओं पर आधारित श्री अशोक भौमिक के चार कविता पोस्टरों और श्री रमाशंकर विद्रोही की पहली कविता पुस्तक 'नई खेती' का लोकार्पण वरिष्ठ आलोचक श्री मैनेजर पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर श्री शमशेर पर श्री कुबेर दत्त द्वारा सम्पादित फिल्म 'कवियों के कवि शमशेर' भी दिखाई गई। 'शमशेर और मेरा कविकर्म' विषयक संगोष्ठी में कवि श्री वीरेन डंगवाल ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। संगोष्ठी में सर्वश्री मदन कश्यप, अनामिका, त्रिनेत्र जोशी, शोभा सिंह, इब्बार रब्बीर और मंगलेश डबराल ने अपने विचार रखे। दूसरा सत्र काव्यपाठ का था, जिसके प्रारम्भ में श्री शमशेर द्वारा पढ़ी गई उनकी कविताओं के वीडियो का प्रदर्शन हुआ।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती मनाई

हिन्दी अकादमी द्वारा विश्वकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती मनाई गई। दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जे०एन०यू० के पूर्व कुलपति प्रो० बी०बी० भट्टाचार्य थे, मुख्य वक्ता श्री बलदेव वंशी थे। वक्ता थे युवा आलोचक श्री विभासचन्द्र वर्मा। अकादमी के उपाध्यक्ष श्री अशोक चक्रधर ने इस अवसर पर टैगोर की चुनिंदा कविताओं का पाठ किया। संचालन अकादमी के सचिव श्री रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने किया।

'कगार की आग' का मंचन

नई दिल्ली में नाट्य दल 'गाथा' द्वारा विख्यात कथाकार हिमांशु जोशी के बहुचर्चित उपन्यास 'कगार की आग' का दिल्ली के 'पूर्वा सांस्कृतिक केन्द्र' में मंचन हुआ। पर्वतीय जन-जीवन की त्रासदी पर आधारित इस कृति ने दर्शकों को गहरे तक प्रभावित किया।

बाबू गुलाबराय जयन्ती समारोह सम्पन्न

विगत दिनों हिसार में शुक्लोत्तर युग के मनीषी विद्वान् बाबू गुलाबराय की 123वीं जयन्ती पर एक साहित्यिक समारोह जिज्ञासा मंच के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता हरियाणा के साहित्य रत्न एवं राज्यकवि श्री उदयभानु हंस ने की और मुख्य अतिथि थे इम्पीरियल कॉलेज के प्राचार्य श्री कुलदीप आर्य। वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुशील बुडाकोटी शैलांचली ने मुख्य वक्ता के रूप में बाबू गुलाबराय जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

बाबू गुलाबराय जी के पुत्र विनोद शंकर गुप्त ने अपने पिता जी के संस्मरण सुनाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर डॉ० राधेश्याम शुक्ल की साहित्यिक सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए उन्हें 'बाबू गुलाबराय स्मृति-सम्मान' से सम्मानित किया गया।

साहित्य लेखकों को एक झण्डे तले लाता है

''आज जबकि चारों ओर आतंक और दुश्मनी का माहौल दिखाई दे रहा है, साहित्य का महत्त्व कई गुना अधिक बढ़ गया है। इस प्रकार की कथा-गोष्ठियों के आयोजन से हमारा प्रयास है कि हम हिन्दी और उर्दू के लेखकों के बीच एक बेहतर समझ पैदा कर सकें। आम आदमी के बीच मित्रता एवं शान्ति पैदा करने में लेखक एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।'' यह कहना था काउंसलर ज़कीया जुबैरी का और अवसर था कथा यू०के० एवं एशियन कम्युनिटी आर्ट्स द्वारा मिल-हिल, लन्दन में आयोजित साझा कथागोष्ठी का। जिसमें उर्दू की वरिष्ठ कहानीकार सफ़िया सिद्दीकी एवं हिन्दी के महत्त्वपूर्ण कथाकार तेजेंद्र शर्मा ने प्रबुद्ध श्रोताओं के सामने अपनी-अपनी कहानी का पाठ किया।

अश्क और शमशेर की जन्मशती

नई दिल्ली स्थित इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के मानविकी विद्यापीठ द्वारा उपेन्द्रनाथ अश्क और शमशेर बहादुर सिंह की जन्मशताब्दी के अवसर पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी ने अश्क को अनेक कोणों से याद किया।

इस सत्र में बीज वक्तव्य प्रख्यात आलोचक प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने दिया। दूसरा सत्र शमशेर बहादुर सिंह पर केन्द्रित था। इस सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो० नामवर सिंह ने खास तौर से शमशेर से जुलाई, 1942 में हुई अपनी पहली मुलाकात का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि शमशेर 'परफेक्शनिस्ट' कवि थे।

बाजार ने भाषा को बाजारू बनाया

दिल्ली पुस्तक मेला के अवसर पर ऑथर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया ने एक सेमिनार और कवि सम्मेलन का आयोजन किया। सेमिनार का विषय था—भाषा और बाजार। चर्चा की शुरुआत करते हुए ऑथर्स गिल्ड के महासचिव डॉ० एस०एस० अवस्थी ने कहा कि पिछले कुछ दशकों में बाजार और भाषा के क्षेत्र में जितने परिवर्तन हुए हैं उतने पहले कभी नहीं हुए। बाजार ने मनुष्य को उपभोक्ता और संसाधन के नजरिए से देखा है। व्यक्ति की अन्य भूमिकाओं को उसने नकार दिया है। उन्होंने कहा कि बाजार के कारण हिन्दी साहित्य तथा अन्य भाषाओं का प्रचार-प्रसार हुआ है लेकिन यह भी सत्य है कि बाजार ने भाषा को बाजारू बना दिया है।

बचपन और सपने के बगैर साहित्य नहीं लिखा जा सकता

कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के राधाकृष्णन सभागार में मुंशी प्रेमचंद स्मारक शोध एवं अध्ययन केन्द्र लमही के तत्त्वावधान में एकल व्याख्यान प्रसिद्ध समालोचक श्री अशोक वाजपेयी का 'प्रेमचंद और हमारा समय' विषय पर आयोजित हुआ। अपने इस व्याख्यान में अशोक वाजपेयी ने प्रेमचंद के समय एवं वर्तमान समय का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए कहा कि मनुष्यता के इतिहास में यह सबसे हिंसक समय है। प्रेमचंद का समय आज की अपेक्षा कम हिंसक था। हिंसा को बढ़ाने में धर्मों की विशेष भूमिका है। यह सिर्फ हिंसक समय ही नहीं झूठ के दिग्विजय का समय है। यह साहित्य का सबसे उपेक्षित समय है। प्रेमचंद की विशिष्टता बताते हुए उन्होंने कहा कि हर बड़ा लेखक अपने समय के बाद पुनर्पाठ, हो सके तो कुपाठ की माँग करता है। इस एकल व्याख्यान का विषय प्रवर्तन संस्थान के सदस्य-सचिव प्रोफेसर कुमार पंकज ने किया।

डॉ० हरिप्रसाद दुबे के ग्रन्थ का लोकार्पण

फैजाबाद में हिन्दी जगत के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ० हरिप्रसाद दुबे के ग्रन्थ 'अनाम समग्र' का लोकार्पण समारोह साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या के जगदम्बिका प्रताप नारायण सभागार में किया गया। फैजाबाद की माटी में जन्मे वरिष्ठ कवि साहित्यकार पं० रामचन्द्र कौल 'अनाम' की सम्पूर्ण कृतियों के साथ तीस विद्वानों के आलेख सहित प्रकाशित इस प्रथम महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'अनाम समग्र' का लोकार्पण उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के महात्मा गाँधी पुरस्कार से इसी वर्ष सम्मानित प्रसिद्ध साहित्यकार से० रा० यात्री और प्रख्यात व्यंग्य लेखक एवं कार्टूनिस्ट आबिद सुरती ने किया।

परिसंवाद सम्पन्न

साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभागार नई दिल्ली में 'नागरी लिपि और भारतीय भाषाएँ' शीर्षक परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन प्रतिष्ठित भाषाविद् डॉ० लोकेशचन्द्र ने किया। उद्घाटन सत्र में बीज भाषण में डॉ० रामनिरंजन परिमलेंदु ने देवनागरी लिपि आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया। 'भारतीय भाषाएँ और देवनागरी लिपि' शीर्षक प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ० वागीश शुक्ल ने की, 'भारतीय भाषाएँ एवं देवनागरी लिपि' शीर्षक द्वितीय सत्र डॉ० ब्रजबिहारी कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। 'सूचना प्रौद्योगिकी और देवनागरी लिपि' शीर्षक अन्तिम सत्र की अध्यक्षता डॉ० अशोक चक्रधर ने की। कार्यक्रम के अन्त में अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने भारतीय भाषाओं और सूचना प्रौद्योगिकी के सन्दर्भ में देवनागरी लिपि को लेकर हुए महत्त्वपूर्ण विचार-विमर्श के लिए सभी विद्वानों का औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

अज्ञेय जन्मशती समारोह सम्पन्न

विगत दिनों रजा फाउण्डेशन, वत्सल निधि और साहित्य अकादेमी द्वारा अज्ञेय जन्मशती समारोह मनाया गया। इस अवसर पर अज्ञेय से सम्बन्धित संस्मरणों की पुस्तक 'अपने-अपने अज्ञेय' के दो खण्ड एवं डेढ़ दर्जन अन्य पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। समारोह की शुरुआत 'अज्ञेय : रचनाकार व्यक्तित्व और रचना-कर्म' विषय पर चर्चा से हुई, जिसमें सर्वश्री कृष्णदत्त पालीवाल, कुँवर नारायण, यू०आर० अनंतमूर्ति और रमेशचन्द्र शाह का व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वत्सल निधि के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह ने की। इस अवसर पर अज्ञेय रचनावली और भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित तथा अज्ञेय द्वारा अनूदित अंग्रेजी पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ। दोपहर के सत्र में 'शास्त्रार्थ परम्परा में स्त्रियों का योगदान' विषय पर हीरानंद शास्त्री स्मारक व्याख्यान श्री राधावल्लभ त्रिपाठी ने दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ओम थानवी ने की। शाम के सत्र में 'आज अज्ञेय' विषय पर वत्सल निधि व्याख्यान श्री अशोक वाजपेयी ने दिया और अध्यक्षता श्री नंदकिशोर आचार्य ने की। अगले दिन का आयोजन अज्ञेय की कविताओं और गद्य के नाट्य पाठ से शुरू हुआ। इसके बाद श्री उदय प्रकाश 'अज्ञेय का आत्मसंघर्ष' पर, श्री यतीन्द्र मिश्र और श्री राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय 'अज्ञेय : आधुनिकता और परम्परा' पर, श्री मदन सोनी 'साहित्य का स्वराज और अज्ञेय' पर और श्री कृष्णमोहन झा ने 'अज्ञेय की प्रासंगिकता' पर विचार प्रकट किए। 'अज्ञेय की वैचारिकी' विषय पर श्री नंदकिशोर आचार्य और श्री अपूर्वानंद ने अपने विचार रखे। 'कामायनी, गोदान और शेखर' पर श्री दूधनाथ सिंह तथा 'अज्ञेय और विभाजन की त्रासदी' पर श्री मैनेजर पाण्डेय ने व्याख्यान दिया। आयोजन के आखिरी दिन 'अज्ञेय के उपन्यास—मुक्ति की अवधारणा' विषय पर श्री ज्योतिष जोशी और श्री आशीष त्रिपाठी ने व्याख्यान दिया। इसके बाद 'अज्ञेय : पारम्परिक प्रज्ञा से संवाद और विसंवाद' पर श्री राधावल्लभ त्रिपाठी का व्याख्यान हुआ। सर्वश्री सुरेश शर्मा और राजकुमार 'अज्ञेय के कालचिंतन' पर, रामेश्वर राय व भृगुनंदन त्रिपाठी 'वागर्थ का वैभव' पर और ध्रुव शुक्ल व पुरुषोत्तम अग्रवाल ने 'अज्ञेय की सभ्यता समीक्षा' पर अपने विचार रखे।

अज्ञेय जन्मशतवार्षिकी मनाई गई

7 मार्च को गुवाहाटी में अज्ञेय जन्मशतवार्षिकी समारोह के अवसर पर असम की धरती पर हिन्दी साहित्य के विराट् व्यक्तित्व सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' को स्मरण किया गया और उनके बहुआयामी व्यक्तित्व पर रोशनी डाली गई। सर्वश्री राजेन्द्र पाण्डेय, अरुणेश नीरन, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, सत्यव्रत त्रिपाठी ने अज्ञेय की कविताओं की विशेषताओं की चर्चा की। अध्यक्षता विभागाध्यक्ष श्रीमती छाया भट्टाचार्य ने की।

'केदारखण्ड' का लोकार्पण

विगत दिनों नई दिल्ली में लेखिका श्रीमती हेमा उनियाल द्वारा लिखित उत्तराखण्ड के गढ़वाल मण्डल स्थित मन्दिरों, उनके वास्तुशिल्प और संस्कृति व पर्यटन पर आधारित पुस्तक 'केदारखण्ड' का लोकार्पण डॉ० कर्णसिंह ने किया। समारोह में डॉ० पुष्पेश पंत, डॉ० श्याम सिंह शशि और कुलानंद भारतीय के अलावा कई अन्य लेखक और बुद्धिजीवी उपस्थित थे।

साहित्यिक उत्सव सम्पन्न

विगत दिनों राजस्थान के बाड़मेर में नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया ने ओजस्वी संस्थान के साथ मिलकर नेहरू बाल पुस्तकालय की पुस्तकों के लोकार्पण कार्यक्रम में 'पुस्तक संस्कृति के बढ़ते कदम' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया। दस पुस्तकों का लोकार्पण साहित्यकार डॉ० आईदान सिंह भाटी व वयोवृद्ध लेखक श्री खुशालनाथ धीर ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

है और चुप्पी साध लेती है। जो लोग एकाकी हैं, उनके लिए तो पुस्तक सचमुच बेजोड़ संगिनी है और आनन्द का बेजोड़ साधन है।

और जो लोग चाहते हैं कि कुछ सीखें-सिखायें, उन्हें तो किताबों के साथ जीवन-भर का रिश्ता जोड़ लेना चाहिए। सीखने का भी कोई अन्त है!

हाँ, सीखने का कोई अन्त नहीं है। और सीखने के लिए आदमी को पुस्तकों के ही पास जाना पड़ेगा। लेकिन पुस्तकों की सोहबत हम सिर्फ सीखने के लिए ही नहीं ढूँढ़ते। आनन्द के लिए भी हम उनके पास जा सकते हैं। मैंने जान-बूझकर ही 'आनन्द' कहा, न कि 'दिलबहलाव'; क्योंकि ये दोनों जुदा चीजें हैं। अलबत्ता कुछ लोग दिलबहलाव के लिए भी पढ़ते हैं। वे पढ़ते हैं ऐसे किस्से और अफसाने, जो आज हैं और कल न रहेंगे, जो आज नये हैं और कल बासी पड़ जायेंगे।

साहित्य आनन्द देता है, वह दिलबहलाव नहीं करता। साहित्य दर्दनाक हो सकता है, फिर भी उसमें आनन्द होता है—ऐसा आनन्द जिसे समझ पाना मुश्किल है और साहित्य यह आनन्द अपने सत्य और सौन्दर्य के द्वारा, जो कि कवि कीट्स की राय में एक ही है—''सौन्दर्य ही सत्य है, और सत्य ही सौन्दर्य।''

लेकिन जैसे आनन्द दिलबहलाव नहीं है, वैसे ही सौन्दर्य भी मोहकता नहीं है। संसार के श्रेष्ठ साहित्य के अधिकांश पात्र और प्रसंग मोहक नहीं हैं, लेकिन उनमें सौन्दर्य है। उनमें सत्य का सौन्दर्य है, साहसपूर्वक जीवन का सामना करने का सौन्दर्य है।

पुस्तक परिचय

परलोक तत्त्व

लेखक :
भार्गव शिवरामकिंकर योगत्रयानन्द
अनु. : **एस०एन० खण्डेलवाल**

प्रथम संस्क० : 2011 ई०
पृष्ठ : 428

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-783-7
अजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-784-4
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

परलोक नामक ग्रन्थ-प्रकाशन का कारण! मनुष्य यह जानता है कि एक दिन मरना ही होगा। सर्वदा स्मरण न रहने पर भी एक दिन मृत्यु के हृदयहीन करालकवल में अवशभाव से कवलित होना पड़ेगा। नितान्त अनिच्छा के साथ प्रियतम, धनजन का ममता-पाश छेदन करके अनित्य संसार को छोड़ना होगा, यह कभी-कभी स्मरण हो आता है। मरण अवश्यम्भावी है, इसका तो विश्वास है, किन्तु जब यह याद आता है कि मुझे भी एक दिन मरना होगा, तब न जाने क्यों हृदय विचलित हो उठता है, चित्तगगन निराशा के मेघों से आच्छादित हो जाता है। मरण-विचार आनन्दप्रद नहीं है। हमें मरकर यह लोक छोड़ना ही होगा, ऐसे विचार हमारे मन में स्थायी नहीं रहते। मरण का रूप क्या है? सभी का हृदय मृत्युभय से भीत है। मृत्यु किसी की भी प्रिय नहीं है, यह निश्चित नियम होने पर भी हर कोई मृत्यु से भीत नहीं होता। ऐसे व्यक्ति मृत्यु की भी उपेक्षा कर देते हैं। ऐसे सामर्थ्यशाली महान् लोग भी यहाँ हैं। कैसे मृत्यु की भीमभृकुटि की उपेक्षा करने का सामर्थ्य जन्म लेता है? मृत्यु हमारे लिए इतनी अहृद्य तथा भीषण क्यों है?

ज्ञानी का हृदय मृत्यु-भय से कम्पित नहीं होता। हमारा वास्तविक स्वरूप तो आत्मा है, जो मरणरहित है। मैं वास्तव में अमर हूँ, देशकाल आदि जनित परिवर्तन से मेरा परिवर्तन नहीं होता। मैं अविचाली अपरिणामी हूँ, यही ज्ञान है। यदि हम अमर हैं, तब मरण-भय क्यों? तब किसके मरण का भय? मनुष्य-मात्र में यह विश्वास कब सहज होगा कि उसे एक दिन मरना ही है?

परलोक नामक ग्रन्थ के प्रतिपाद्य विषय तथा उसकी प्रतिपादन रीति के सम्बन्ध में कुछ बातें। यह ग्रन्थ चार खण्डों में परिपूर्ण हुआ है। प्रस्तावना, आस्तिक तथा नास्तिक, परलोक क्या है? जीव-जन्म से सम्बन्धित शास्त्रोपदेश, इसी सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों का मत, यह है प्रथम खण्ड का विषय। द्वितीय तथा तृतीय खण्ड में जीव के जन्म-सम्बन्ध में मेरे मन्तव्य की अनुवृत्ति तथा पुनर्जन्म-सम्बन्धित विवेचना है। चतुर्थ खण्ड में पुनर्जन्म-सम्बन्धित मेरी अनुवृत्ति (मन्तव्य की अनुवृत्ति), कर्मतत्व का संक्षिप्त विवरण, लोकान्तर, मरणोत्तर जीव की गति तथा ब्रह्म, ईश्वर, जीव तथा लिंग देह का विवरण है।

परलोक के यथार्थ स्वरूप का वर्णन करने के लिए, लोकान्तर, कर्मतत्व, मरणोत्तर जीवगति, ब्रह्म, ईश्वर, जीव तथा लिंगदेह, इन सब तत्वों की तत्व-व्याख्या आवश्यक है।

रहस्यमय सिद्धभूमि तथा सूर्यविज्ञान

मूल उपदेष्टा :
महामहोपाध्याय पद्मविभूषण
डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज
अनु. : **एस०एन० खण्डेलवाल**

प्रथम संस्क० : 2011 ई०   पृष्ठ : 152

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-792-9
अजि. : रु० 90.00 ISBN : 978-81-7124-776-9
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सूर्यविज्ञान सम्बन्धित इस ग्रन्थ को पढ़कर कोई भी त्रिकाल में सूर्यविज्ञान में निष्णात नहीं हो सकता। इसे पढ़कर योगिराजाधिराज विशुद्धानन्द परमहंसदेव के समान सूर्यविज्ञान जनित सृष्टि चमत्कार करने में भी कोई सफल नहीं हो सकता, क्योंकि यह विज्ञान दीर्घकालीन अध्यवसाय, नियमानुवर्तिता तथा गुरुकृपा से ही प्राप्त हो सकता है। यह प्रायोगिक विज्ञान है। मात्र सैद्धान्तिक नहीं है। जबकि यह ग्रन्थ इसके सैद्धान्तिक पक्ष पर मात्र क्षीण प्रकाश-प्रक्षेपण है।

तब इसे लिखने का तथा संयोजित करने का क्या प्रयोजन? जब यह ग्रन्थ पढ़कर अथवा कण्ठस्थ करके भी सूर्यविज्ञान आयत्त नहीं हो सकता, तब इसे भाषाबद्ध करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना तथा पाठकों द्वारा इसे पढ़कर केवल इसके सम्बन्ध में आलोचना-प्रत्यालोचना करना व्यर्थ श्रम मात्र नहीं तो और क्या है? आपात् दृष्टि से ऐसा प्रतीत होना सम्भव है। परन्तु वास्तविकता कुछ और है। हो सकता है कि इसे पढ़कर किसी भाग्यशाली के मन-मस्तिष्क में इस विज्ञान को प्राप्त करने की प्रकृत इच्छा का उदय हो, उसके अन्दर इसे प्राप्त करने की उद्दाम लालसा उत्पन्न हो। ऐसी स्थिति में नियम यह है कि जिसकी जिस विषय के प्रति यथार्थ तथा सात्विक इच्छा होती है, जो इस प्रकार की सद्इच्छा के आकर्षण तथा अतिरेक के कारण अपने भौतिक (अहं) अस्तित्व के विलोप के साथ-साथ सर्वतोभावेन सर्वेच्छामयी विज्ञाननिधि महाशक्ति के अंक में जा पड़ता है, उसकी वह इच्छा पूर्ण होकर रहती है। अत: इस ग्रन्थ के संयोजन का मात्र उद्देश्य है ऐसी प्रेरणा देना तथा इच्छा का उद्बोधन कराना, जिससे इस लोकोत्तर विज्ञान के प्रति रुचि का जागरण हो सके। प्रत्येक शास्त्र का यही आशय है। उस-उस शास्त्र का अवगाहन करके व्यक्ति उसमें वर्णित तत्त्व के प्रति जाग्रत् तथा आकांक्षित होकर तदनुरूप कर्म में व्यापृत हो जाता है। यही इस ग्रन्थ का प्रयोजन है।

इसमें योगिराजाधिराज विशुद्धानन्ददेव के शिष्य श्री अक्षयकुमार दत्त गुप्त, महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज महोदय के वचनों का मुख्यत: समावेश है। पुस्तक के प्रारम्भ में ज्ञानगंज सिद्धभूमि का भी यथासाध्य वर्णन अंकित है। साथ ही कुछ साधकों की कृतियाँ भी संयोजित हैं।

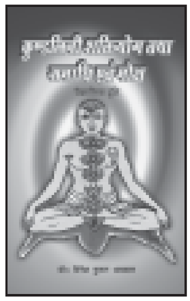

कुण्डलिनी शक्तियोग तथा समाधि एवं मोक्ष : वैज्ञानिक दृष्टि

डॉ० दिनेश कुमार अग्रवाल

पृष्ठ : 128

अजि. : रु० 80.00 ISBN : 81-7124-450-5
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक ने कुण्डलिनी-शक्तियोग के विषय में प्राचीन योगशास्त्रों के आधार पर प्रयोजन, लक्ष्यादि बड़े विस्तार और मननपूर्वक अध्ययन से योग-विद्या का प्रतिपादन किया है। ब्रह्मविद्या अगाध सागर है। ब्रह्मवित् होने से जो शुद्ध परमानन्द ब्रह्म ही है तथा जो अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करने के लिए सूर्य के तुल्य है। परमात्मा की कृपा के बिना यह सहज सम्भव नहीं है। इस विषय पर अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हैं, किन्तु साधक, साधन और साध्य इन पर प्रस्तुत ग्रन्थ में योग-सूत्रों का सरल भाषा में प्रतिपादन हुआ है। हमारा अध्यात्म भी विज्ञान है। आधुनिकता के आज के वातावरण में ऋषि-मुनियों की उपलब्धियों को आयात करने में अवश्य कठिनाई होती है। लेखक ने इन कठिनाइयों के निवारण के लिए आज के युग के अनुरूप आधुनिक विज्ञान के द्वारा प्राचीन योगशास्त्रों को समझाने का भरपूर प्रयास किया है। इस ग्रन्थ की यह विशेषता है। वास्तव में यह गुरु-विद्या है।

अंग्रेजी में अध्यात्म-विज्ञान पर कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। पश्चिम के विद्वानों की जिज्ञासा इस ओर तेजी से बढ़ी है। अंग्रेजी में जब

'सरपेंट पावर' पुस्तक छपी तब कुण्डलिनी-जागरण के लिए उनका प्रयास शुरू हुआ। कुछ वर्ष पूर्व अमेरिकी विद्वान डॉक्टर डेविड फ्रेवले ने 'योग और आयुर्वेद' पर पुस्तक लिखी। बाद में हरिनाम बाबा प्रेम (होम बील) ने भारत आकर गुरुकुल में अध्ययन और अभ्यास किया। इससे स्पष्ट है कि योगशास्त्र के प्रति पश्चिम के विद्वानों में कितनी ललक जागृत हुई है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ने ब्रह्मविद्या पर अपने अनुभव और अध्ययन से पुस्तक की लोकोपयोगिता स्थापित करने में सार्थक श्रम किया है।

कलागुरु केदारशर्मा के व्यंग्य-चित्रों में काशी

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह

पृष्ठ : 312

सजि. : रु० 300.00 ISBN : 81-7124-395-9
अजि. : रु० 200.00 ISBN : 81-7124-463-7
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

महादेव शंकर के त्रिशूल पर बसी, तीनों लोकों से न्यारी काशी का निराला चितेरा, कलम और कूँची का समान रूप से धनी, मन का राजा और फक्कड़—नाम था केदार शर्मा। काशी, जहाँ जिसने धूनी रमाई वह संत ओर योगी बन गया। बाबा विश्वनाथ की जिस पर कृपा हो गयी वह साहित्यकार और कलाकार बन गया। 'चना चबेना, गंगजल जो पूरबे करतार, काशी कभी न छोड़िये, विश्वनाथ दरबार' जहाँ का दर्शन है, गंगा की तरंग में जो डुबकियाँ लगाता रहा वह कहीं बाहर नहीं गया, वह बनारसी बन गया। केदार शर्मा भी देश घूम-घामकर आए। अन्ततः वह बनारस की रसधारा में बह गए। बनारसी रंग से सराबोर हो गए।

काशी का सारतत्त्व है मस्ती और ज्ञान। आनन्दवाद इसका सबसे बड़ा दर्शन है। वह काशी की मस्ती और बनारसी जीवन के चितेरे थे। उन्होंने चित्रकला को अपनी आजीविका का साधन बनाया। चित्रकला की दुनिया में आजीवन रमण करते रहे। उनकी तूलिका में बनारस, बनारसी रंग और जीवन झाँकता है। उनकी रेखाओं में बनारस बोलता है। बनारस सजीव हो उठता है। उनकी रेखाओं में बनारसी पंडा, गुण्डा, जनखे-गौनहारिन, भँगेड़ी, खटकिन, डोमिन, साँड़, कुत्ते, सीढ़ियाँ, बनारसी इक्के, रईस और बुढ़वा मंगल दिखाई पड़ते हैं। इस ग्रन्थ में उनकी कलात्मक रचनाओं का प्रतिनिधि संकलन किया गया है।

कलागुरु केदार तूलिका के ही धनी नहीं, कलम के भी थे। उन्होंने दर्जनों निबन्ध लिखे। उनके निबन्ध साहित्य, कला और बनारसी जीवन पर लिखे गये। वे उच्चकोटि के व्यक्ति-व्यंजक निबन्धकार थे। उनके निबन्धों का संकलन इस पुस्तक में है।

वे हिन्दी के प्रथम व्यंग्य-चित्रकार और व्यंग्य चित्रकथा के सृष्टिकर्ता थे। उनका मण्डूक मिश्र व्यंग्य-चित्रकथा चित्रकला जगत् की अनुपम उपलब्धि है। बिहारी के शृंगारिक दोहों पर उनके व्यंग्य चित्र देखते बनते हैं।

इसमें उनके मित्रों, शिष्यों और कला-आलोचकों द्वारा लिखे गये संस्मरणों का भी संकलन किया गया है जिससे कलागुरु के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। उनके जीवन-दर्शन, कला-दर्शन और साहित्य-दर्शन पर प्रकाश पड़ता है।

इस पुस्तक में कलागुरु केदार शर्मा का जीवन, कला और साहित्य समग्र रूप से दिखाई पड़ेगा।

पांचाली नाथवती - अनाथवत्

बच्चन सिंह

पृष्ठ : 144

सजि. : रु० 125.00
ISBN : 81-7124-264-2
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

महाभारत के विलक्षण चरित्रों को औपन्यासिक रूप में ढालना बेहद कठिन है। कृष्ण द्वैपायन ने इनकी रचना में जगह-जगह स्पेस छोड़ रखा है। उन चरित्रों पर लिखने का मतलब है खाली जगहों को पढ़ना। पांचाली के लेखक बच्चन सिंह इसे 'सूतो वा सूतपुत्रो वा' में प्रमाणित कर चुके हैं। द्रौपदी का चरित्र अपनी फाँकों के कारण अपनी बुनावट में जटिल हो गया है इसका शीर्षक न द्रौपदी है, न याज्ञसेनी। 'पांचाली' साभिप्राय प्रयोग है।

एक अभूतपूर्व अनिंद्य सौन्दर्य। इसके जादू में वह स्वयं बँधी थी दूसरों को भी बाँधे रही। सौन्दर्यगर्विता नारी। पाण्डव इसी जादू के वशीभूत थे। पंजाब के खेतों की तरह लहराता हुआ उसका यौवन बाँध तोड़कर पाँच व्यक्तियों से एक साथ विवाह करता है आर्योचित परम्परा की धज्जियाँ उड़ाता हुआ। जिस तरह पंजाब पाँच नदियों में विभाजित है उसी तरह पाँच पतियों में विभाजित द्रौपदी का अविभाजित व्यक्तित्व। यह विभाजित व्यक्तित्व ही उसे एक सम्पूर्ण स्त्री बनाताहै। स्त्री के अधिकारों के पक्ष में फूटता हुआ पहला मुखर स्वर। इस उपन्यास में इस स्वर की अनुगूँज सर्वत्र व्याप्त है।

पूरे महाभारत में प्रेम केवल द्रौपदी करती है—असफल प्रेम। वह अर्जुन से प्रेम करती है और अर्जुन यहाँ-वहाँ भटकता रहता है। भीम से प्रेम करना उसकी नियति है। युधिष्ठिर रति-कक्ष में भी उबाऊ कथाएँ सुनाते हैं। कृष्ण का सखीत्व रहस्यमय है। कई बार उसका अपहरण होता है—जयद्रथ द्वारा, कीचक द्वारा। इस जद्दोजहद में उसका निर्माण भी होता है। उसके जीवन का सर्वाधिक दुखद और त्रासद अध्याय है—कुरुओं की भरी सभा में उसे नंगा करने का प्रयास। वह अभी भी जारी है।

नंगा होते-होते वह ज्वालामुखी में बदल गई, दुःशासन द्वारा खींचे गए उसके काले घुँघराले केश कुचले साँप की तरह फूत्कार उठे। नारी अपना अपमान नहीं भूलती। कुरुक्षेत्र का मैदान अपमान की चिताओं में धू-धू कर जल उठता है।

नारी मुक्ति आन्दोलन की नींव का पहला पत्थर द्रौपदी ही रखती है। 'पांचाली' में इसके साथ ही है 'कचिदन्यतोपि'।

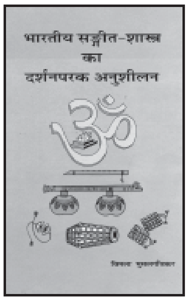

भारतीय सङ्गीत-शास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन

विमला मुसलगाँवकर

पृष्ठ : 432

सजि. : रु० 400.00
ISBN : 81-7124-152-2
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारतीय सङ्गीतशास्त्र इस देश के अन्य किसी भी शास्त्र की भाँति जीवन के प्रति अखण्ड दृष्टि से ओतप्रोत है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में सङ्गीतशास्त्र में व्याप्त सृष्टि विज्ञान अर्थात् पिण्ड-ब्रह्माण्ड के दर्शन को उजागर किया गया है। इस प्रसङ्ग में वेद (चारों संहितायें एवं प्रमुख ब्राह्मण व आरण्यक), उपनिषद्, वेदाङ्ग (शिक्षा-व्याकरण, निरुक्त छन्द, ज्योतिष-कल्प), आगम (तन्त्र), न्यूनाधिक षड्दर्शन (विशेषतः योग) आदि की भाषा में सङ्गीतशास्त्र की मूलभूत अवधारणाओं की विशद व्याख्या की गयी है। स्वाभाविक है कि वाक्तत्त्व अधिकांश चर्चा का केन्द्रबिन्दु रहा है। इसके अतिरिक्त सामान्य गणित एवं संख्याशास्त्र तथा अंकों की आकृतियों के विषय में बहुत रोचक चर्चा की गई है।

विषय-प्रतिपादन में देश, काल और इन दोनों की सन्धि—ऐसे तीन प्रमुख विभाग बनाये गये हैं। स्पष्टता के लिए प्रस्तुत अनेक चित्र, रेखाचित्र, सारणियों आदि से यह ग्रन्थ समृद्ध है।

इस प्रकार भारतीय सङ्गीतशास्त्र के अध्ययन की एक सर्वथा नवीन दिशा प्रस्तुत करने का श्रेय इस ग्रन्थ को अवश्य है। यह ग्रन्थ सङ्गीतशास्त्र के विद्यार्थियों, शिक्षकों, अनुसन्धानकर्ताओं के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति की समग्रता के रसिकों के लिए भी रोचक एवं उपादेय होगा।

संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक : एक अध्ययन

डॉ० आशारानी त्रिपाठी

सजि. : रु० 225.00 पृ. : 232

ISBN : 81-7124-322-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

साहित्य सृजनकर्ता के संवेदनशील, सरस एवं बहुआयामी व्यक्तित्व की भाषिक अभिव्यक्ति है। साहित्यकार की प्रतिभा एवं व्युत्पत्ति है। साहित्यकार की प्रतिभा एवं व्युत्पत्ति सम्पन्न बौद्धिक चेतना प्रतिक्षण अभिव्यक्ति के नवीन परन्तु प्रभावशाली माध्यमों का अन्वेषण करती रहती है। दर्शन के गूढ़ तत्त्वों को नाट्य विधा के चटकीले इन्द्रधनुषी रंगों में डुबो कर प्रस्तुत करना भी रचनाकार का एक ऐसा ही प्रयत्न है। संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक अपनी दार्शनिक विषयग्राह्यता एवं नाट्य विधानों के अनोखे निबन्धन के कारण सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। सांसारिक प्रपञ्चों में जकड़े, रागद्वेषादिसंमूढ एवं दु:खों से भयभीत मानव को उसके जीवन के परम लक्ष्य '**मोक्ष**' का स्मरण कर शाश्वत सुख प्राप्ति के लिए प्रेरित करना ही इन नाटकों का मुख्य उद्देश्य है। दु:खार्त श्रमार्त एवं तपस्वियों को भी विश्रांति प्रदान करने वाले ये नाटक मानवीय भावनाओं के गूढ़तम गह्वर में प्रवेश कर उसमें चलने वाले प्रवृत्ति-निवृत्ति के अन्तर्द्वन्द्व को विभिन्न पात्रों के रूप में उपस्थित करके सूक्ष्म दार्शनिक विचारों को स्थूल एवं बोधगम्य रूप प्रदान करते हैं। दर्शन के ब्रह्म, जीव, जगत् जैसे दुरूह विषयों की प्रस्तुति समस्त नाटकीय विधानों को दृष्टि में रखकर के ही की गयी है। रचनाकारों का यह प्रयत्न मानवीय मनोविज्ञान की यथार्थता के तह तक पहुँचकर सिद्धान्त एवं व्यवहार के मध्य के अन्तर को दूर करने में सक्षम है। नाटक श्रेय प्राप्ति के उपायों का ज्ञापक है। प्रतीकात्मक नाटक नाट्यविद्या के इन उद्देश्यों को चित्रित करने वाले बहुरंगी फलक है।

सात्वतार्चन : वासुदेव शरण अग्रवाल जन्मशती स्मृति ग्रन्थ

डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी
डॉ० कमल गिरि

पृष्ठ : 304 + चित्र 54 पृ०

सजि. : रु० 500.00 ISBN : 978-81-7124-578-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'**सात्वतार्चन**' के रूप में विद्वज्जनों की यह सारस्वत श्रद्धांजलि उस मनीषी के जन्मशती के अवसर पर अर्पित है जिन्होंने सात्वत वंशके शिरोमणि वासुदेव के शरण में रहते हुए अपना जीवन यापन किया। भारती विद्या एवं संस्कृति के प्रखर अध्येता प्रोफेसर वासुदेव शरण अग्रवाल काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला एवं स्थापत्य (वर्तमान में 'कला-इतिहास एवं पर्यटन प्रबन्ध') विभाग के 1951-66 तक अध्यक्ष रहे। विभाग ने अग्रवाल जी की जन्मशती पर 2004-05 में शताब्दी वर्ष मनाया जिसके अन्तर्गत विविध आयोजन सम्पन्न हुए। उन आयोजनों में अग्रवाल जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन (दिनांक 28-30, नवम्बर, 2004) प्रो० मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी के निर्देशकत्व में सम्पन्न हुआ जिसमें देश के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों ने सम्मिलित हो कर अपने चिन्तन, मनन एवं साधना के पुष्पों से अग्रवाल जी के कृतित्व, व्यक्तित्व तथा भारतीय कला एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर विचार-विमर्श करते हुए अपनी अर्चनाएँ प्रस्तुत कीं। अग्रवाल जी के शिष्यों में डॉ० कपिला वात्स्यायन, डॉ० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी, प्रो० आनन्द कृष्ण एवं डॉ० श्याम नारायण पाण्डेय ने बड़े मनोयोगपूर्वक अपने उद्गारों को लिपिबद्ध कर प्रकाशनार्थ प्रस्तुत किया। अन्य विद्वानों में कुछ वे लोग हैं जो अग्रवाल जी के समय में अध्ययनरत थे और उनसे सम्बद्ध रहे। अग्रवाल जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व से प्रभावित कई अध्येताओं एवं विभाग के छात्र-छात्राओं ने भी प्रस्तुत '**सात्वतार्चन**' में अपनी अर्चना के पुष्प पिरोए हैं। इस माला में उन्तीस मनके हैं।

प्रस्तुत संकलन के सात पर्व हैं। पहले पर्व में अग्रवाल जी का संक्षिप्त जीवन चरित, उनकी चुनी हुई कृतियों की एक सूची, पद्मभूषण राय कृष्णदास द्वारा अग्रवाल जी का एक मूल्यांकन तथा अग्रवाल जी द्वारा लिखित लेख 'विष्णु का विक्रमण' का पुनर्प्रकाशन है। साथ ही कला-इतिहास एवं पर्यटन प्रबन्ध विभाग का संक्षिप्त परिचय तथा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का विवरण एवं उस अवसर पर डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा किया गया उद्घाटन सम्बोधन एवं प्रो० दयानाथ त्रिपाठी के उद्बोधन सम्मिलित हैं।

शेष छ: पर्वों में कुल अट्ठाईस प्रपत्र हैं। उल्लिखित छ: पर्व इस प्रकार हैं—अग्रवाल जी द्वारा भारतीय संस्कृति के अध्ययन में किए गए योगदानों की चर्चा से सम्बन्धित छ: प्रपत्र, अग्रवाल जी की समग्र दृष्टि को स्पष्ट करने वाले चार प्रपत्र, अग्रवाल जी के प्रिय विषयों पर किए गए अध्ययनों से जुड़े छ: प्रपत्र, अग्रवाल जी द्वारा की गई कुछ व्याख्याओं के पुनर्विश्लेषण के चार प्रपत्र, भारतीय कला एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर किए गए अध्ययनों के सात प्रपत्र एवं अग्रवाल जी के कुछ दिशा निर्देश तथा अपने जीवन में सम्पादित किए जाने वाले कार्यों की सूची का हस्तलेख प्रस्तुत करते हुए लिखा गया एक प्रपत्र।

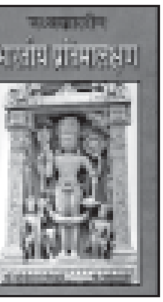

मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण

डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी
डॉ० कमल गिरि

पृष्ठ : 404 + चित्र 82 पृ०

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 81-7124-162-X

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण शीर्षक पुस्तक में सातवीं से तेरहवीं शती ई० के मध्य की देवमूर्तियों का ऐतिहासिक दृष्टि से लक्षणपरक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन तत्कालीन सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियों और सोच की पृष्ठभूमि में हुआ है। मध्यकाल देवमूर्तियों के स्वरूप और उनके लक्षणों की विविधता की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध था। साथ ही तत्कालीन देवमूर्तियों में सामाजिक सामंजस्य और धार्मिक सौहार्द भी प्रतिध्वनित है जिसकी जानकारी वर्तमान विसंगतियों के सन्दर्भ में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है।

पुस्तक में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन प्रतिमालक्षण का सम्भवत: पहली बार एक साथ और विस्तारपूर्वक अध्ययन हुआ है जिनमें उनकी तुलनात्मक विशेषताओं को भी रेखांकित किया गया है। तालिकाओं एवं चित्रों के माध्यम से विषय को और भी स्पष्टता प्रदान की गयी है।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

आगामी प्रकाशन

आलोचना और रचना की उलझनें

मुद्राराक्षस

हिन्दी की वर्तमान आलोचना, कुछ मार्क्सवादियों को छोड़कर लगभग शत-प्रतिशत व्यावहारिक समीक्षा में तब्दील हो चुकी है। पुस्तक-समीक्षा, या ज्यादा से ज़्यादा रचनाओं के बहाने पसन्दीदा लेखकों की विवेचना में सीमित हो गई हिन्दी-आलोचना। शायद यह, जाने-अनजाने, इसलिए हुआ हो कि आज के सभी स्थापित आलोचक अध्यापन करते रहे हैं और व्यावहारिक समीक्षा अभ्यासजन्य परिणाम हो। यह भी ध्यान देने की बात है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य के भी कुछ बड़े और शुरुआती आलोचक भी अध्यापन से जुड़े रहे थे लेकिन उन्होंने कृतियों और कृतिकारों की जो विवेचनाएँ की थीं वे पुस्तक-समीक्षा की प्रवृत्ति से दूर थीं, भले ही उनसे आज मतभेद भी हों। इस परम्परा के अन्तिम लेखक-आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा थे भले ही उनमें सांस्कृतिक पुनरुत्थान के तत्त्व बहुत प्रबल थे। कुछ हद तक अमृतराय, अज्ञेय और नेमिचन्द्र जैन को भी इसी कोटि में रखा जा सकता है।

व्यावहारिक समीक्षा प्राध्यापकीय ज़रूरत का परिणाम तो रही ही है, उसके कुछ और कारण भी हैं। व्यावहारिक समीक्षा एक तरह से पिछले कुछ आधी सदी के अरसे में व्यवहारकुशल समीक्षा में तब्दील हुई है। जिन समीक्षकों का स्थान ऊँचा हो गया वे साहित्य को छोड़कर बड़े इनाम-इक़राम और किताबों की थोक खरीद में सुविधा के लिए समीक्षा लिखने लगे। यही वजह है कि आज की हिन्दी रचनात्मकता के बजाय कारीगरी पर उतर आई और कथा-लेखन (महिलाओं के कथा-लेखन को छोड़कर) दुनिया के लेखन से बहुत पीछे रह गया। यह भी हैरानी की बात है कि मुख्य हिन्दी-आलोचकों ने यह बात कभी समझनी नहीं चाही कि महिला-लेखन किन अर्थों में शेष कथा-लेखन से अलग है। हालाँकि दलित-लेखन ने हिन्दी में अपनी खास पहचान नहीं बनाई लेकिन दलित-लेखन की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक वैचारिकता को लेकर हिन्दी आलोचना मासूमियत के साथ खामोश बनी रही। स्त्री-विमर्श और दलित-विमर्श को लेकर हिन्दी के महत्त्वपूर्ण बन गए हिन्दी-समीक्षक उबासी लेते रहे हैं।

इस संग्रह में कुछ आलेख पिछली सदी के पाँचवें और छठे दशक की काव्य प्रवृत्तियों पर हैं। हिन्दी-आलोचना में इस काल की पूरी उपेक्षा की गई थी जैसे यह एक सांस्कृतिक विकार या समाजशास्त्र की नजर से कल्चुरल ऐबेरेशन रहा हो। निस्सन्देह छठे दशक का बहुत सा काव्य-लेखन, जो उस समय की नई पीढ़ी द्वारा किया जा रहा था वह युवा अराजकता की भूमि पर खड़ा हुआ था लेकिन इस बात की पड़ताल उचित ढंग से होनी चाहिए कि इसके पीछे कैसा मोहभंग था। इसके पीछे चेगुएरा, रेगिसदेब्रे और फ्रांसीसी युवा क्षोभ का कितना हाथ था, ऐलेन जिन्सबर्ग और दूसरे बीटनिकों का प्रभाव कितना था। उस समय भारत में ही भूखी पीढ़ी, स्मशानी पीढ़ी, दिगम्बर पीढ़ी जैसे अनेक साहित्यिक आन्दोलनों में लेखकों की नई पीढ़ी उलझी हुई थी।

यही साठ का दशक भारत में जबर्दस्त राजनीतिक उथल-पुथल और ग़ैर-कांग्रेसवाद का था। इसी साठ के दशक में मार्क्सवादी पार्टी से असन्तुष्ट कुछ युवाओं ने उत्तरी पश्चिम बंगाल में नक्सलवाद के नाम से जाना गया हथियारबन्द क्रान्ति का अभियान शुरू किया था। इस अभियान के रूमान ने पार्टी से बाहर के युवाओं को बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब में बहुत गहराई से प्रभावित किया था। हैरानी है कि हिन्दी के आलोचकों ने नई पीढ़ी की इन प्रवृत्तियों से गहरी नफ़रत के कारण इन पर कभी ध्यान देने की ज़रूरत महसूस नहीं की। इस एक ऐतिहासिक जिम्मेदारी की उपेक्षा अपने अहंकार के कारण करके हिन्दी के आलोचकों ने अक्षम्य गुनाह किया था।

यहाँ मैं याद दिलाना चाहूँगा कि पश्चिम में इसी दौर में खुद नाटक की दुनिया में ऐब्सर्ड ड्रामा जैसा बड़ा, रचनात्मक और सशक्त आन्दोलन खड़ा हुआ था। खुद कविता की नई पीढ़ी के प्रभावशाली आन्दोलन खड़े हुए थे। रचना-परम्परा को इस तरह ध्वस्त करके कुछ बिल्कुल नया खड़ा करने की कोशिशों के इतिहास की उपेक्षा मार्क्सवाद ने भी की थी। इसलिए इस किताब में उस समय की प्रवृत्ति की कुछ विवेचनाएँ मिलेंगी।

बनारस के यशस्वी पत्रकार

शोध एवं सम्पादन

बच्चन सिंह ● डॉ० वशिष्ठ नारायण सिंह

बनारस के स्वनामधन्य पत्रकारों ने न केवल हिन्दी पत्रकारिता के विकास में अमूल्य योगदान दिया है वरन् हिन्दी भाषा एवं गद्य के विकास को भी सीढ़ी-दर-सीढ़ी उस मुकाम पर पहुँचाया है, जहाँ से हिन्दी भाषा ने कई ऐसे आयाम खोले हैं जिन पर गर्व किया जा सकता है। राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' ने सर्वप्रथम स्कूली बच्चों के लिए हिन्दी में पाठ्य-पुस्तकें लिखीं तो पराड़कर जी ने हिन्दी को दो सौ नए शब्द दिए और उनके द्वारा लिखे गए सम्पादकीय तथा लेख हिन्दी की अमूल्य धरोहर हैं। अद्भुत प्रतिभा के धनी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पत्रकारिता और साहित्य दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से दखल रखते थे। इसी प्रकार 'मुंशी प्रेमचंद', कृष्णदेवप्रसाद गौड़ 'बेढ़ब बनारसी', मोहनलाल गुप्त 'भैयाजी बनारसी' तथा 'ठाकुरप्रसाद सिंह' जैसे कई महान् पत्रकार बनारस ने पत्रकारिता जगत् को दिए जिन्होंने साहित्य में भी अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है।

बनारस की पत्रकारिता की शुरुआत 'बनारस' अखबार से होती है जिसे राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' ने निकाला था और इसके सम्पादक थे गोविन्द रघुनाथ थत्ते। यदि कलकत्ता का 'उदन्त मार्तण्ड' न होता तो 'बनारस' अखबार हिन्दी का पहला समाचार-पत्र होता। इस समाचार-पत्र से जो सिलसिला शुरू हुआ वह लगातार जारी रहा और 1920 ई० में 'आज' के प्रकाशन ने तो बनारस की पत्रकारिता में एक क्रान्ति ही ला दी। सबसे अधिक पत्रकार इसी समाचार-पत्र ने बनारस को दिए लेकिन इसके अलावा भी कई ऐसी पत्र-पत्रिकाएँ निकलीं जिनका पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान अविस्मरणीय है। इनसे सम्बन्धित कुछ यशस्वी पत्रकारों का उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है।

परतन्त्र भारत में पत्रकारिता कर्म 'तलवार की धार पर चलने' जैसा था किन्तु बनारस के पत्रकारों ने इस चुनौती को सफलतापूर्वक स्वीकार किया और अपने अनगढ़ श्रम, अखण्ड निर्भीकता, तप, त्याग एवं साधना की बदौलत हिन्दी पत्रकारिता को उदात्त मूल्य, ऊँचे आदर्श और मानदण्ड दिए। यह अलग बात है कि समय के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में आए बुनियादी परिवर्तनों के कारण ये सभी ध्वस्त हो गए हैं। अब पत्रकारिता व्यवसाय हो गई है और पत्रकार व्यवसायिक।

इस पुस्तक में ऐसे पत्रकारों का जिक्र है जिन्होंने पत्रकारिता के मूल्यों और सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। वे किसी वाद या गुट से निरपेक्ष रहकर अपने कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर रहे। चाहे जितनी मुफ़लिसी झेलनी पड़ी हो, कलम की गरिमा और पेशे की पवित्रता बनाए रखी।

साधन पथ

लेखक

महामहोपाध्याय पद्मविभूषण
डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

प्रात:स्मरणीय महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराजजी के उपदेश- वाक्यों तथा लेखों के अनुवाद का यह संग्रह एक प्रकार से भले ही क्रमबद्ध रूप से विषय की आलोचना का रूप न ले सके, तथापि इसकी प्रत्येक पंक्ति में अगम पथ का सन्धान मिलता रहता है। यहाँ पथ का तात्पर्य आन्तरिक पथ है। बाह्य पथ यह संसार है। सम्पूर्ण संसार में से हमारी इस पृथ्वी का चक्रमण मनुष्य द्वारा साध्य है। आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से इस विशाल पृथ्वी का

प्रसार हम नाप लेते हैं। उसकी परिक्रमा अनायास कर लेते हैं। वह सब एक पथ का आश्रय लेने से होता है। परन्तु अन्तर्जगत् जो हमारे अस्तित्व में स्थित है, वह भले ही इस साढ़े तीन हाथ की देह का जगत् हो, वह आज भी हमारे लिए अज्ञात है। क्योंकि उसमें प्रवेश करने का कोई पथ खोजे भी नहीं मिलता। हजारों-हजारों किलोमीटर की इस भूमण्डल की परिक्रमा उतनी कठिन नहीं है, जितना कठिन है इस अन्तर्जगत् के पथ पर एक बिन्दु भी अग्रसर हो सकना! हम बाह्य जगत् में गुरुत्वाकर्षण तथा वायुमण्डल के अवरोध को पार करते हुए उसमें भले ही आगे बढ़ते चले जाते हैं, परन्तु अन्तर्जगत् के मध्याकर्षण से पार पा सकना विज्ञान के लिए भी दुःष्कर है। 'बलादाकृष्य मोहाय' मोहरूपी मध्याकर्षण बलात् आकृष्ट करके हमें पथ के आरम्भ में ही पटक देता है। हम इस दुरन्त अवरोध से, मध्याकर्षण से छुटकारा पाये बिना अन्तर्जगत् में कैसे अग्रसर हो सकते हैं? अत: इसके लिए पहले साधन के नेत्र पाना होगा, मध्याकर्षण से मुक्ति का उपाय पाना होगा, तभी हम कालान्तर में अन्तर्जगत् के अज्ञात पथ पर आगे बढ़ सकते हैं।

इस ग्रन्थ में ऐसा ही कुछ दिशा-निर्देश है। पहले साधनपथ पर चलना तदनन्तर अन्त:पथ ढूँढ़ना। अथवा कृपा पाकर दोनों पर ही युगपत रूप से एक साथ भी चालन हो सकता है। इसका स्वरूप कृपा सापेक्ष है। गुरुकृपा, भगवत्कृपा तथा शास्त्रकृपा! भगवत्कृपा का कोई नियम नहीं है वह अहेतुकी है। गुरुकृपा आज के परिवेश में और भी दुष्कर हो गई है। सद्गुरु का पता नहीं चलता, वैसे तो गुरु नगर-नगर, गली-गली भरे पड़े हैं! त्रेता, द्वापर तथा सत्ययुग में भी इतने गुरु नहीं रहे होंगे! परन्तु सद्गुरु... ? अन्त में बचती है शास्त्रकृपा। सत्शास्त्र वह है जिसे स्वानुभूति से लिखा, बताया, सुनाया गया हो। केवल शब्दों का जाल न हो। जिसमें 'आँखिन की देखी' बात हो। इस सन्दर्भ में पूज्य कविराजजी की वाणी पर किसे सन्देह हो सकता है? कई बार पूछा गया— ''आप जो कहते हैं, वह तो उपलब्ध शास्त्रों में नहीं है। तब आप यह सब कहाँ से बतलाते हैं?'' धीर गम्भीर स्वर में उनका उत्तर था—''मैं जो सामने देखता हूँ, वह कहता हूँ। कहते समय भी वह मेरे नेत्रों के सामने प्रतिच्छवित होता रहता है।'' और ऐसा उनके द्वारा लिखित ग्रन्थ 'श्रीकृष्ण प्रसंग' में स्पष्ट झलकता है।

यह 'साधनपथ' तथा इसमें प्रतिपाद्य प्रत्येक विषय प्रत्यक्ष पर आधारित हैं। स्वानुभूत सत्य हैं। अत: शास्त्र हैं। इसलिए इसके अनुशीलन अध्ययन से शास्त्रकृपा प्राप्त हो जाती है। जो इस अनुभूति-सागर में जितना गोता लगा सकेगा, वह उतने ही रत्न का, कृपारूपी मुक्ता का आहरण कर सकेगा। यह नि:सन्दिग्ध है।

तत्वानुभूति

लेखक

महामहोपाध्याय पद्मविभूषण
डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

प्रात:स्मरणीय महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराजजी की साधनोज्वल प्रज्ञा में जिस तत्वानुभूति का प्रतिफलन हुआ था, यह उसी का संकलन है। तत्त्व से यहाँ षट्त्रिंश तत्त्व किंवा पंचतत्वादि का तात्पर्यार्थ नहीं है। यहाँ तत्त्व का अर्थ प्राणब्रह्म, आत्मब्रह्म, परब्रह्मरूप सत्ता है, जो तत्वातीत होकर भी सर्वतत्त्वमय है। इनका तत्वातीत रूप मन-वाणी-अनुभूति, सबसे परे है। जीवदशा में इनके इस रूप की अनुभूति कर सकना भी असम्भव है, यहाँ तक की इनकी धारणा भी इस देहयन्त्र से कोई कैसे कर सकता है? तथापि महापुरुष के अन्त:चक्षु इनके तत्त्वमय स्वरूप की अनुभूति कर ही लेते हैं, यही है परमतत्त्व की अनुग्रहरूप कृपा। स्वप्रयत्न से कोई भी इस तत्वानुभूति का अधिकारी नहीं हो सकता। यह कृपा-सापेक्ष है।

यह अनुग्रहानुभूति सामान्य जन के लिए दुष्प्राप्य है। इस अनुभूति प्रभा को धारण करने योग्य जिस चित्तफलक की आवश्यकता है, वह पाकर भी मनुष्य उस पर संश्लिष्ट कल्मष का मार्जन नहीं कर सका है। ऐसी स्थिति में महापुरुष की तत्वानुभूतिपूर्ण वाङ्मयी त्रिपथगा में, ज्ञान-भक्ति-कर्म की अन्त:सलिला में निमज्जन करके जिज्ञासुवर्ग अवश्य कृतार्थ होगा और उसके इस स्नान से स्वच्छ-धौत-निष्कल्मष चित्तफलक पर किंचित् परिमाण में वह अनुभूति अवश्य प्रतिच्छवित हो सकेगी, यह विश्वास करता हूँ।

स्मृति-शेष

आलोचक डॉ० भवदेव नहीं रहे

पिछले दिनों मिर्जापुर में वरिष्ठ समालोचक डॉ० भवदेव पाण्डेय का निधन हो गया। आपको उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से साहित्य भूषण और हिन्दी गौरव के साथ ही विद्या वाचस्पति और अज्ञेय सम्मान मिला था।

'अंकल पई' नहीं रहे

बच्चों की कॉमिक पुस्तक शृंखला अमर चित्रकथा और टिंकल कॉमिक्स के संस्थापक अनंत पई का बृहस्पतिवार 24 फरवरी 2011 को 82 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। वह 'अंकल पई' नाम से विख्यात थे।

पुरवार का निधन

समाजवादी चिंतक, लेखक एवं सामाजिक कार्यकर्ता त्रिलोकीनाथ पुरवार नहीं रहे।

लतिका रेणु नहीं रहीं

इस बीच 'मैला आँचल' जैसे महत्त्वपूर्ण आँचलिक उपन्यास के लेखक स्व० फणीश्वरनाथ रेणु की पत्नी लतिका रेणु भी हमारे बीच नहीं रहीं।

कवि-आलोचक डॉ० विनय नहीं रहे

27 दिसम्बर को सुप्रसिद्ध कवि-आलोचक डॉ० विनय का निधन हो गया। वह 75 वर्ष के थे। उनकी रचनओं में 'एक पुरुष और महाश्वेता' (प्रबन्ध काव्य), 'एक प्रश्न मृत्यु' (काव्य नाटक), 'पहला विद्रोही था', 'इन्हें जानते हैं' (नाटक), 'रंग ब्रह्म' (काव्य रूपक), 'कामायनी : एक नाट्य रूपान्तरण' तथा 'देवव्यास आए' (उपन्यास) प्रमुख हैं।

फार्म 4
(नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन स्थान	वाराणसी
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है?)	जी हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	
पता	चौक, वाराणसी
4. प्रकाशक का नाम	अनुरागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है?)	जी हाँ
5. सम्पादक का नाम	परागकुमार मोदी
(क्या भारत का नागरिक है?)	जी हाँ
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी

मैं अनुरागकुमार मोदी एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
(अनुरागकुमार मोदी)

(दिनांक 1 मार्च, 2011)

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

मदन बावनिया (उपन्यास), लेखक : राजेन्द्र केडिया, प्रकाशक : वृन्दा प्रकाशन, 16 नूरमल लोहिया लेन, कोलकाता–700007, संस्करण : प्रथम, मूल्य 350/– रु० मात्र।

× × × एक वामन (बौने) व्यक्ति के माध्यम से विश्व–विस्तार के बीच अनुभूत जीवन–सूत्रों का सम्यक्–समीकरण प्रस्तुत करता है 'मदन बावनिया'। राजस्थान की रेतीली धरती से उपजे जाट–किसान, नट–बाजीगर, चोर–साधु, कालबेलिया आदि हाशिये के चरित्रों के माध्यम से लेखक ने व्यक्ति और समाज के बौनेपन को अनावृत्त किया है। रचनागत आंचलिक बोली–बानी, वहाँ की आबो–हवा और मिट्टी की गन्ध लिये उपन्यास को विश्वसनीय बनाते हैं तो दूसरी ओर मानव–सम्वेदनाओं का व्यापक फलक उसे राष्ट्रीय कलेवर प्रदान करता है।

राव रजपूत रासो, लेखक : राव दिलीपसिंह 'चंदज' दसूँदी मेवाड़, प्रकाशक : यतीन्द्र साहित्य सदन, सरस्वती–विहार, जिला एवं सत्र न्यायालय के सामने, भीलवाड़ा (राजस्थान), संस्करण : प्रथम, मूल्य 300/– रु० मात्र।

× × × 'रावरजपूत रासो' अपने आप में एक ऐसा गवेषणापूर्ण ग्रन्थ है, जो 'राव + रजपूतों' के ऐतिहासिक सर्वेक्षण के साथ–साथ भारतीय संस्कृति, साहित्य और इतिहास के अनेक अनुबन्ध उद्घाटित करता है।

'रावरजपूत रासो' के कतिपय प्रसंगों से मनीषी विद्वानों की सहमति होना शंकास्पद हो सकती है, किन्तु राव दिलीपसिंह 'चंदज' ने अपने कथ्य को सप्रमाण प्रस्तुत किया है।

सिद्धामृत सूर्य क्रियायोग, महायोगी स्वामी बुद्धपुरीजी महाराज, प्रकाशक : शब्द सुरत संगम आश्रम, गाँव मल्लके, जिला : मोगा (पंजाब) – 151207, संस्करण : द्वितीय, मूल्य 20/– रु० मात्र।

साहित्य सागर (फरवरी–11), सम्पादक : कमलाकांत सक्सेना, 161 बी, शिक्षक कांग्रेस नगर, बाग मुगालिया, भोपाल–462043

विवरण पत्रिका (फरवरी–11), सम्पादक : धोण्डीराव जाधव, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद, नामपल्ली–1

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद पत्रिका (जनवरी–फरवरी–11), सम्पादक : डॉ० वि० राम संजीवैय्या, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद, 58 वेस्ट ऑफ कॉर्ड रोड, राजाजी नगर, बेंगलूर–560010

वार्ता वाहक (फरवरी–11), सम्पादक : डॉ० ब्रजसुन्दर पाढ़ी, सचिव, हिन्दी शिक्षा समिति, ओड़िशा, शंकरपुर, अरुणोदय मार्केट, कटक–753012

मंगल प्रभात (फरवरी–मार्च–2011), सम्पादक : प्रो० रमेश भारद्वाज, गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, 1 जवाहरलाल नेहरू मार्ग, सन्निधि, राजघाट, नई दिल्ली–110002

गाँधीजी पर विवादित पुस्तक पर गुजरात में प्रतिबन्ध

गुजरात सरकार ने पुलित्जर पुरस्कार विजेता अमेरिकी लेखक जोसफ लेलीवेल्ड की किताब 'ग्रेट सोल : महात्मा गाँधी एण्ड हिज स्ट्रगल विद इण्डिया' पर राज्य में प्रतिबन्ध लगा दिया है।

मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 30 मार्च को इस सम्बन्ध में राज्य विधानसभा में एक प्रस्ताव पेश किया जिसका प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस ने भी समर्थन किया। किताब में राष्ट्रपिता के निजी जीवन को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई है। राज्य में इस पुस्तक की बिक्री, वितरण, प्रकाशन और प्रसार पर पाबन्दी रहेगी। प्रस्ताव में लेखक से सार्वजनिक रूप से माफी की माँग भी की गई है। मोदी ने कहा कि गाँधीजी के अपमान के लिए समूचे देश में किताब पर रोक लगाई जानी चाहिए। इंग्लैण्ड और अमेरिका में प्रकाशित इस किताब की समीक्षाओं में दावा किया गया है कि गाँधीजी समलैंगिक थे और उनका हरमन कालेनबाख नामक एक जर्मन–यहूदी बॉडीबिल्डर प्रेमी था।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 12 मार्च–अप्रैल 2011 अंक : 3–4

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक
स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी–174/2009–11
RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-005/2009-2011

सेवा में,

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

प्रेषक : (If undelivered please return to :)
विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी–221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)